

# सुख शांति समृद्धि

Regd. No. : MAHHIN08172/13/1/2010 -TC

वर्ष : १ अंक - २ हिन्दी मासिक

मुंबई, जनवरी २०१३

संपादक : जितू सोमपुरा

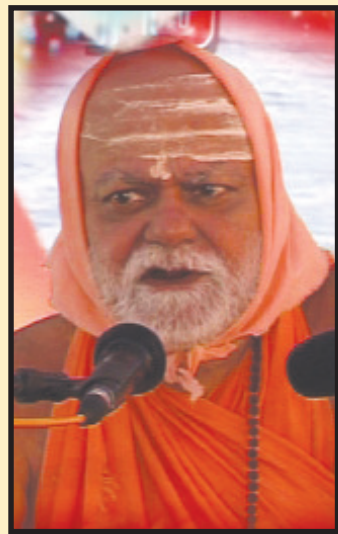
पृष्ठ - १६ मूल्य : २ रुपये

## भक्तों की समस्या को हल करने वाले पूज्य शंकराचार्यजी के मार्ग में कौन-कौन सी समस्याएं हैं?

जगत गुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज के दर्शन मात्र से ही, उनके विचारों से ही कई भक्त हैं, जिनकी समस्याएं हल हो चुकी हैं, लेकिन क्या आप जानते हो कि उनको अपने कार्य में कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। हमने पूज्य श्री को प्रार्थना की - महाराज जी आपको अपने विराट कार्य में कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, तब बड़ी शांति से उन्होंने अपने एक विस्फटक उत्तर में बताया :

जगत गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री निश्चलानंद सरस्वतीजी महाराज : सब ओर से चुनौतियां ही चुनौतियां हैं - कारण क्या है? कि स्वतंत्रता के बाद से अब तक शासन तंत्र ने पूरे हिंदू समाज को पार्टी और पंथों में विभक्त कर दिया है, साथ ही साथ धन, आन, मान, प्राण, पर्यत तक समाज सीमित हो गया है। राजनैतिक दल अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए कथा वाचक बनाने लग गये हैं। संत वेश में घूमने लग गये हैं। विदेशी षडयंत्र को क्रियान्वित करने के लिए हिंदू राजनेता स्वयं को अग्रदूत यंत्र बना चुके हैं। जो शंकराचार्य किसी राजनैतिक दल से गठबंधन गुप्त या प्रकट नहीं करते। उनको अपने अस्तित्व की रक्षा करना बहुत कठिन प्रतीत हो रहा है। बहुत से अराजक तत्व भी धर्माचार्य बनाके विविध राजनैतिक और सामाजिक संस्थाओं के द्वारा घुमाये जा रहे हैं, ऐसी परिस्थिति में सर्वत्र चुनौतियां ही चुनौतियां हैं। जो दम्भ का परिचय नहीं देता, दिशाहीन व्यापार तंत्र शासन तंत्र से तालमेल नहीं बैठता। समाज उसको इतना भी नहीं देखता है,

जिससे वह अपने मठ का संचालन कर सके, तो चुनौतियां ही चुनौतियां हैं, लेकिन उसमें हम हतोत् प्रभ



नहीं होते हैं, ऐसी चुनौतियां धर्माचार्यों को पहले भी प्राप्त होती रही है, भगवत पार, शिवावतार शंकराचार्य महाभाग ने इन चुनौतियों के रहते हुए भी अपना मार्ग प्रशस्त किया। लेकिन उस समय व्यक्ति सत्य को स्वीकार करते थे, आज कल झूठ का इतना वर्चस्व है, सज्जनों को पीड़ित करने के लिए, अराजक तत्वों को प्रोत्साहित करने के लिए शासन तंत्र का दंड जागरूक है।

ऐसी स्थिति में चुनौतियां तो सबकुछ हैं। नित्य प्रति हिंदुओं के अस्तित्व आदर्श पर छलबल डंके की चोट से प्रहार किया जा रहा है। अब हिंदुओं को यह भी नहीं पता चल पाता है कि हमारा अस्तित्व आदर्श विलुप्त हो रहा है, क्योंकि वो संस्कार से हीन हो गये हैं? जैसे बीच मार्ग में खराटे से सोया हुआ पशु यह नहीं जानता है कि उस पर विपत्ति है, कोई भी दुर्घटना हो सकती है। जैसे हिंदुओं को इतना चेतना विहीन बना दिया गया है। उन्हें इतना भी नहीं पता कि उनके अस्तित्व आदर्श का विलोप हो रहा है। हिंदु की परिभाषा आज यह हो गयी है कि वह अपने शरीर गिने चुने सगे संबंधियों तक सीमित हो गया है। आज गंगा विलुप्त की जा रही है। विकास के नाम पर गाजर मूली की तरह विलुप्त किया जा रहा है। विकास के नाम पर भारत की मेघाशक्ति का विनाश हो रहा है। विकास के नाम पर प्रतिदिन हमारे देश की भूमि पाकिस्तान, बांग्लादेश, चीन की ओर खिसकती है, (पृष्ठ ११ पर)

## हरेक व्यक्ति भगवान की पूजा अर्चना करे

जगतगुरु शंकराचार्य पूज्य स्वामी श्री स्वरूपानंद सरस्वतीजी महाराज का सुख शांति समृद्धि मासिक को संदेश



सुख शांति समृद्धि मासिक को आशीर्वाद! जिसका मन शांत होता है वही सुखी होता है। जिस प्रकार नदियां, समुद्र में मिले या ना मिले, तब भी समुद्र बढ़ता नहीं और घटता नहीं है, वैसे जिनका मन अनुकूल विषय की प्राप्ति से सुख का अनुभव नहीं करता और विपरीत अवस्था में दुख का अनुभव नहीं करता, उसी को शांति कहते हैं। सब लोग सदाचारपूर्वक जीवन बिताये, भगवान की पूजा अर्चना करें और तत्वज्ञान प्राप्त करें, भगवान शंकराचार्य के सिद्धांतों को अपनाये, सब शरीर में एक ही आत्मा है।

कोई पराया नहीं है। किसी से द्वेष ना करे। किसी से घृणा न करे। ज्ञान से बढ़कर कोई पवित्र वस्तु नहीं है और संसार में सारे दुखों का मूल अज्ञान ही है और उस अज्ञान का नाश ज्ञान से होता है और किसी उपाय से नहीं होता।

## आर्थिक असमानता को निपटाने में भारतीय अध्यात्मवाद ही सक्षम है

संत श्री अविचलदास जी महाराज-अखिल भारतीय संत समिति के महामंत्री : अज्ञान ही सारी समस्याओं का जनक है, संतों का सामिप्य और ईश्वर में विश्वास विकास को पूर्णता देगा



आज संस्कृति में अज्ञान का तत्व प्रविष्ट हो गया है, जो दुख का बीज है! सभी की समझ-शक्ति बढ़े, स्वार्थी परमार्थी बने-यही शुभकामना है।

आज पचासी प्रतिशत सम्पत्ति देश के पंद्रह प्रतिशत लोगों के खजाने में संचित है, जबकि पंद्रह प्रतिशत सम्पत्ति का बंटवारा करने के लिए

पचासी प्रतिशत लोग जूझ रहे हैं। इस विषमता से निपटने में भारतीय अध्यात्मवाद ही सक्षम है। हिन्दुत्व के प्रति द्वेषपूर्ण रवैया देश के लिए दुर्भाग्यजनक है। (पृष्ठ ११ पर)

सुख शांति समृद्धि मासिक की गंगोत्री सुख शांति टी. वी. सीरियल के निर्माण का प्रारंभ होने जा रहा था, तब हमारे गुजरात के दोनो विश्व वंदनीय संत पू. श्री मोरारीबापु एवं पू. श्री रमेशभाई ओझा ने हृदयपूर्वक आशीर्वाद के साथ शुभ संदेश दिया था, वो हम प्रस्तुत कर रहे हैं :

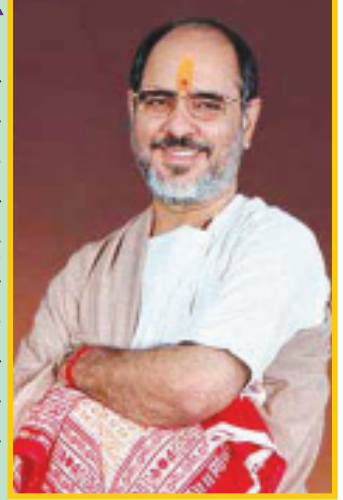


### संत श्री मोरारी बापू

आप के दर्शकों के लिए मुझे इतना ही कहना है कि बाहरी सुख के लिए बाहरी उपकरण चाहिए, लेकिन तुलसी जी स्वतः सुख को शांति कहते हैं, जो भीतर का सुख है, वो शांति है जो बिना उपकरण, बिना किसी का आधार लिए प्राप्त होती है, सुख ज्यादातर दूसरों पर आधारित रहता है और शांति व्यक्ति के खुद की होती है आपके चैनल-सीरियल के दर्शकों के लिए, मैगजीन के लिए बाहरी सुख भी सब के लिए सुलभ हो और भीतरी शांति भी उपलब्ध हो, ऐसी हनुमानजी के चरणों में मेरी प्रार्थना है।

### संत श्री रमेश भाई ओझा

जय श्री कृष्ण, श्री जीतूभाई सोमपुरा द्वारा सुख शांति नाम से टी. वी. सीरियल का शुभारंभ हो रहा है और उसमें समाज में होने वाली गतिविधियों एवं संत महापुरुषों के द्वारा प्रदत्त धर्म और अध्यात्म का संदेश लोगों तक पहुंचाने का प्रयास है। धर्म ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है और धर्माचरण से मन शुद्धि और मन शुद्धि से परमात्मा में अनुराग, सत्य के प्रति प्रेम, आदि बातें चरितार्थ होती है और इसलिए धर्म की अगत्यतता बहुत समय से हम लोगों ने स्वीकार की है। इस सीरियल-मैगजीन के द्वारा भी वही संदेश जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास है। इस प्रयास को शुभकामना परमात्मा से प्रार्थना सब का मंगलमय हो।



## ‘सुख शांति समृद्धि’ मासिक के संपादक का परिचय

### पीस ऑफ माइंड

(विश्वविख्यात ब्रह्माकुमारी संस्था का टी. वी. चैनल से जुड़े हैं)

### भक्ति सागर

(धार्मिक टी. वी. चैनल क्षेत्र की प्रेरणामूर्ति का एक और समर्पण से जुड़े हैं)

# ‘सुख शांति समृद्धि’

## ईश्वर धर्म जीवन के संबंध में भारत के सर्वप्रथम प्रश्नोत्तरी का मासिक

सर्जन और संपादन में व्यस्त वरिष्ठ पत्रकार जीतु सोमपुरा पत्रकारत्व और धार्मिक टी. वी. चैनल जगत में पिछले ३४ साल से जुड़े हैं।

वर्तमान में वे सुख शांति समृद्धि मासिक के संपादक-मालिक हैं। विश्वविख्यात ब्रह्माकुमारी संस्था के पीस ऑफ माइंड चैनल और धार्मिक टी. वी. चैनल क्षेत्र की प्रेरणामूर्ति की भक्ति सागर टी. वी. चैनल के साथ जुड़े हुए हैं। उनकी सुख शांति समृद्धि नामक टी. वी. सीरियल एक साल से पीस ऑफ माइंड चैनल पर नियमित प्रसारित हो रही है।

सोमपुराजी देश विदेश में सर्वप्रथम धार्मिक कार्यक्रमों की गंगा बहाने वाली गुजराती चैनल गुर्जरी में धार्मिक प्रोग्राम के मैनेजर थे। पांच साल बाद आस्था संस्कार चैनल का उदय हुआ। उसके बाद उन्होंने आस्था, संस्कार, एम. टी. एन. एल. और बी. एस. एन. एल. की आय. पी. टी. वी. ज्ञान, यु. के. की एम. ए. टी. वी. चैनल में अपना श्रेष्ठतम योगदान दिया। इसके अलावा ई टी. वी. गुजराती के लिए १ साल से अधिक समय तक धार्मिक कार्यक्रम उपलब्ध कराए। बहुआयामी व्यक्तित्व



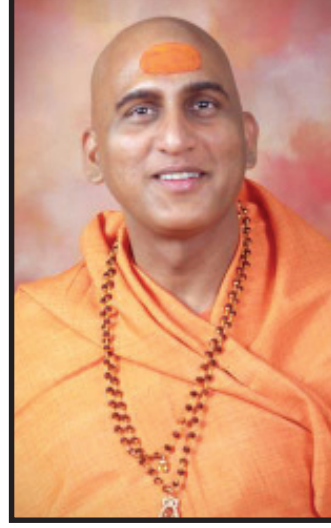
के श्री जितु भाई मुंबई के अग्रणी जन्मभूमि ग्रुप के गुजराती दैनिक में १८ साल पत्रकार रहे। इन्होंने ३ गुजराती

फिल्म और ३ गुजराती टी. वी. धारावाहिक लिखी है। इनकी एक फिल्म को गुजरात सरकार का श्रेष्ठ पटकथा लेखक का अवार्ड मिला है। श्री. जितुभाई स्वामिनारायण संप्रदाय के पूज्य श्री प्रमुखस्वामीजी महाराज की मुलाकात पर आधारित अक्षर संवाद पुस्तक के लेखक भी है। गुजरात के पूज्य महामंडलेश्वर श्री भारती बापू द्वारा निर्मित गुजरात के प्राचीन २०० भजन और उनके इतिहास की ५० घंटे की डी. वी. डी. के संपूट की परिकल्पना एवं पुरुषार्थ इनकी अनेक विशेषताओं में से एक है।



# यथार्थ ज्ञान का जन्म श्रद्धा की कोख से होता है

**जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानंद गिरिजी महाराज की सुख शांति समृद्धि मासिक के लिए ली हुई विशेष मुलाकात के कुछ अंश आपके सामने प्रस्तुत है।**



विचार आता है, तब मन, बुद्धि, चिन्तन एवं चेतना से परे का तत्व प्रेरक चिन्तन आता है, तब व्यक्ति सुख और शांति के साथ-साथ समाधान को भी प्राप्त होता है।

पदार्थ तो अन्धकार में भी होता है, किंतु उसे उद्भाषित करता है। ज्ञान बोधकारक है, शांति कारक है, आनंद कारक है, समाधानकारक है, मुक्तिकारक है। आत्मसत्ता का बोध और उसके साथ जगन्नाथ के संबंधों का बोध ही यथार्थ ज्ञान है। इस यथार्थ ज्ञान का जन्म श्रद्धा की कोख से होता है। 'श्रद्धावान लभते ज्ञानम्' और ज्ञान का फल है, शांति और स्थिरता! यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति के बाद कुछ शेष नहीं रह जाता।

जीवन की स्वाभाविक माँग है सुख! सुख की प्राप्ति के लिए व्यक्ति किसी न किसी वस्तु का, व्यक्ति का, दृश्य का, घटना का अथवा पदार्थ का आश्रय लेता है। कुछ पदार्थों में सुख का स्वाभाविक आकर्षण छुपा हुआ है। इस आकर्षण से आकर्षित व्यक्ति उस पदार्थ के द्वारा सुख की कल्पना करने लग जाता है। सुख प्रदान करने वाले पदार्थ से व्यक्ति को राग होने

लगता है और यही राग उसके दुख का कारण बनता है। क्षणिक सुखों के व्यामोह में पड़ा व्यक्ति भूल जाता है कि सच्चा सुख पदार्थों के सेवन में नहीं, अपितु भगवद् भजन में है।

ज्ञानलब्ध परम शांति! जब ज्ञान जीवन में आता है, आत्म-परमात्म तत्व बोध जीवन में आता है, तब शांति आती है, यथार्थ और वास्तविकता आती है। आपकी

पत्रिका भक्त और भावुक जनों के लिए विचारमूलक, समाधान मूलक बनेगी, अच्छे संस्कारों का प्रत्यारोपण करेगी-ऐसी हमारी अपेक्षा है। कालजयी, मृत्युजयी संस्कृति के रक्षण, संवर्धन के लिए, भारत की एकता-अखंडता-सम्प्रभुता के लिए सुख शांति समृद्धि पत्रिका हेतु हम संतों के अनेकानेक आशीष!!

सुख और शांति मन की अवस्था

का नाम है। अनुकूलता में सुख, प्रतिकूलता में दुख की अनुभूति होती है। शास्त्रगत मान्यताओं के अनुसार सुख का विचार एवं चिन्तन सापेक्ष चिन्तन है। व्यक्ति के मन में, आसपास में जब अतीन्द्रिय

## श्री भूपेन्द्र भाई पंड्या का प्रश्न और श्री सत्यमित्रानंद गिरिजी महाराज का उत्तर



### परमात्मा की कृपा आप सभी पर बरसती रहे-श्री भूपेन्द्र भाई पंड्या

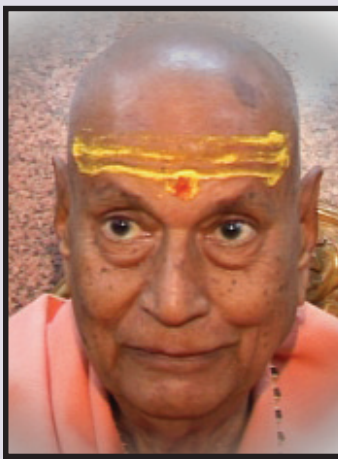
सुख शांति समृद्धि मासिक के लिए हमने युवा हृदय को आकर्षित करने वाले तेजस्वी कथाकार श्री भूपेन्द्रभाई पंड्याजी को विनती की कि वे मासिक परिवार के पाठकों की ओर से एक प्रश्न करे, तो उन्होंने बड़े प्यार से हमारी विनती को स्वीकार किया और कहा : सभी संतों के परम श्रद्धेय स्वामी श्री सत्यमित्रानंद गिरिजी महाराज के पावन सानिध्य में आइए सुख शांति के इस वास्तविक विश्व में आपका स्वागत हो, परमात्मा की कृपा आप सभी पर बरसती रहे। पूज्य स्वामीजी हमें बतायेंगे कि जीवन में सुख और शांति कैसे प्राप्त हो?

## सुख शांति की प्राप्ति एक दिन में नहीं मिलेगी, इसलिए सद्गुणों का अभ्यास करें : संत श्री सत्यमित्रानंद गिरिजी महाराज

संत श्री सत्यमित्रानंद गिरिजी महाराज: सुख और शांति का मार्ग वास्तव में तो परमात्मा का ही स्मरण है, लेकिन केवल परमात्मा का स्मरण करने से तो जीवन चलता नहीं इसलिए जीवन में व्यवहार की आवश्यकता है। व्यवहार में व्यापार आता है, कला आती है, संगीत आता है, चित्रकारी आती है, पर्यटन आता है, वाहन व्यवहार आता है।

ये जीवन के ऐसे व्यवहारिक

भिन्न-भिन्न क्षेत्र हैं, जिनमें व्यक्ति को काम करना पड़ता है और अब सुख और शांति प्राप्त करनी होती इन सब के बीच में एक बात का ध्यान रखना है कि ये सब कर्म मुझे कहीं बंधन में तो नहीं डालेंगे यानी इसके साथ असत्य नहीं जुड़ना चाहिए। व्यवहारिक जीवन में जितना बन सके सत्य का व्यवहार मनुष्य के हृदय को शुद्ध रखता है और जहां-जहां शुद्धि है, वहीं प्रेम है। गंगा के



पास हम इसलिए आते हैं क्योंकि वह पवित्र है, यदि वह गटर बन जायेगी तो कोई स्नान करने नहीं आयेगा। दिल्ली में यमुना में कोई स्नान नहीं करता, भले स्त्रोत्र गाते होंगे, पूजा करते होंगे, पर स्नान नहीं करते। क्यों?

पवित्रता नष्ट हो जाती है, शुद्धि समाप्त हो जाती है, जीवन ऐसा है इस जीवन को शुद्ध और पवित्र रखने के लिए प्रवाहित तो है, जब तक नहीं मरेंगे

जीवन की सरिता प्रवाहित हो रही है, इसलिए आवश्यक है सुख और शांति और इसकी प्राप्ति एक दिन में नहीं मिलेगी। इसलिए पहले से अभ्यास करें, सेवा, करुणा, दया, समता, प्रमाणिकता, सतत कर्म, बिना परिश्रम किये कुछ भी प्राप्त करने की इच्छा ऐसे सद्गुण हैं, जिनसे बिना माँगे व्यक्ति को संतोष मिलेगा और वही संतोष सुख और शांति का मार्ग है। उसमें से ही परमात्मा का सतत चिन्तन अपने आप होने लगेगा।



अमिताभ बच्चन, शाहरुख खान, ऋतिक रोशन, सलमान खान, आमिर खान, अक्षय कुमार, अजय देवगन, संजय दत्त सहित अनेकों बड़े-बड़े स्टारों की कुछ फिल्मों के साथ अगर एक ही नाम जुड़ा है तो वो नाम है प्रसिद्ध फिल्म राइटर रॉबिन भट्ट। प्रस्तुत है- प्रसिद्ध फिल्म राइटर राबीन भट्ट का प्रश्न :

## युवाओं का अशांत मन कैसे शांत होगा?

प्रसिद्ध फिल्म राइटर रॉबिन भट्ट का प्रश्न : आज के युवाओं का ये बहुत बड़ा सवाल खड़ा होता है - जब भी समाज में अव्यवस्था देखते हैं, जब समाज में देखते हैं कि एक इंसान दूसरे इंसान का दुश्मन बना हुआ है - देखते हैं कि धर्म के नाम पर युद्ध चल रहे हैं। और इसी हालत में और इस परिस्थिति में आप युवाओं को क्या सलाह देंगे? आप उनके अशांत मन को किस प्रकार शांत करेंगे और वे किस तरह सही रास्ते पर चलेंगे। कृपया मार्गदर्शन दें।

## भारत के श्रेष्ठ विद्वानों में से एक श्रीमद् परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रोत्रीय ब्रह्मनिष्ठ, निर्वाण पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर श्री विश्व देवानंद जी महाराज का उत्तर



चारों तरफ हम जहां भी दृष्टि डालेंगे - यदि हमारी दृष्टि में कुछ समझौता के सूत्र हैं, कुछ जीवन को सहज रूप से देखने की यदि कोई अपने अंदर विवेक की जागृति है तो जीवन सहज होगा, शिकायत मुक्त होगा, सुख रूप होगा, व्यक्ति के मन की एक सहजता है कि वह अपने समानांतर को स्वीकार नहीं कर पाता है। वह दूसरे से आगे तो हो जाना चाहता है, लेकिन उससे यदि कोई आगे होना चाहता है, तो उसको वह देख नहीं पाता। स्वीकार नहीं कर

पाता, कभी जो अपने पीछे है, उनके प्रति वह निंदक हो जाता है और इसके साथ युवाओं के मन में एक शिकायत की शुरुआत होती है। एक सूत्र बहुत ही गंभीर अर्थों में योगदर्शन में कहा गया है - हम सब अपने आप में ईश्वर की चेतना में जीवन को देखें। ईश्वर की महिमा में, उसकी सत्ता में हम सब चल रहे हैं, जो कुछ सुख या दुख सहज रूप से आता है। हमारे कुछ गलत काम हो सकते हैं, उनसे दुख मिल सकता

है। शरीर के तल पर यदि हम असावधान हैं, हमारा खान पान बिगड़ जाता है, तो कोई बीमारी हो सकती है। जहां तक मन के दुःख अलग हैं और शरीर के दुःख अलग हैं। शरीर के दुख उतना दुखी नहीं करते जितना मन के दुख दुखी करते हैं। इस संदर्भ में युवावर्ग देखें, जो हम अपने समानांतर व्यक्ति को उनके प्रति मन में मित्रता का भाव हो और जो हमारे से स्तर में नीचे है दयनीय है उनके प्रति करुणा का भाव रखें

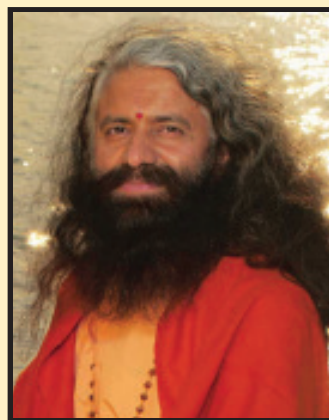
और जो हम से आगे है उनके प्रति ईर्ष्या न हो करके सहज प्रसन्नता का भाव हो और जो अपने स्वभाव से गलत व्यवहार करे, गलत लगते हैं गलत आचरण में दिखते हैं और उनको हम से सुधारने का प्रयत्न तो करे लेकिन उनके प्रति अन्तस में उपेक्षा का भाव हो, यदि ये सूत्र होंगे तो निश्चय ही सामाजिक जीवन में युवाओं की शिकायतें हैं, मन को चुभने वाली व्यवस्था है, वो अपने आप शांत हो जायेगी। अन्तस में

योग दर्शन में जिन व्यवस्थाओं को महाव्रत के रूप में बताया। सत्य अस्ते अहिंसा ब्रह्मचर्य अपरिग्रह में पांच यम हैं, सौज संतोष तप स्वाध्याय और ईश्वर प्रधान ईश्वर के प्रति समर्पण ये नियम हैं। यदि इन महान व्रतों को हम समालोचना के साथ अपने कथन में अपना लेते हैं तो निश्चित ही हमारे आस पास जो अशांति और दुख की प्रतीती होती है, वह अपने आप में निरस्त हो जायेगी।

## अज्ञान से ही जीवन में सारा टकराव है : स्वामी चिदानंद सरस्वती मुनी जी महाराज

ऋषि संस्कृति ने प्रार्थना करते हुए कहा- 'असतो मा सद्गमया, तमासो मा ज्योतिर्गमय' आज ज्ञान की जिन किरणों को प्रस्फुटित होना चाहिए, उन्हें अज्ञान के बादलों ने ढँक लिया है। अंधकार और अज्ञान की वजह से ही सारा टकराव है। जो दूसरों को सता सताकर प्राप्त होती है। उसे सत्ता

कहते हैं, परंतु जो स्वयं को तपा-तपाकर प्राप्त होती है वह सत्य या सत्य की प्रतिकृति होती है। जब तक हम सत्य के मार्ग पर नहीं चलते तब तक दिव्य और पवित्र जीवन खुल नहीं पाता, खिल नहीं पाता। जीवन के खुलने व खिलने के लिए जीवन में सत्य का प्रकाशित होना आवश्यक है। रही बात शांति



की, तो उसके लिए कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं है, जिन चीजों को करने से अशांति उत्पन्न होती है, वह न करें।

मैं समझता हूँ - जीवन के किसी भी कोने में व्यक्ति खड़ा हो, चाहे वो मुसीबतों में हो और चाहे वो खुशियों में हो, चाहे उसके पास कितनी भी समस्यायें

हो, उन सबका समाधान है, हमारी आस्था, हमारी श्रद्धा, जिस दिन आस्था टूटती है, जिस दिन श्रद्धा टूटती है, उस दिन व्यवस्था टूटती है। चाहे वो फिर व्यक्तिगत हो या फिर समाज की हो, इसलिए श्रद्धा आस्था का संगम हमारे जीवन में बना रहे, ये बहुत आवश्यक है।





गुजराती फिल्मों के सुप्रसिद्ध अदाकार अरविंद त्रिवेदी ने सुख शांति समृद्धि मासिक के आमंत्रण को स्वीकार करके भारत के पूजनीय संतों को दो प्रश्न किये, जिनमें से एक का उत्तर अपने सामाजिक कार्यों द्वारा वैदिक संस्कृति को जीवन्त रखने के लिए हमेशा प्रयत्नशील आवाहन पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर श्री शिवेन्द्रपुरीजी महाराज देंगे

## रामायण टी. वी. सीरियल के लंकेश का प्रश्न

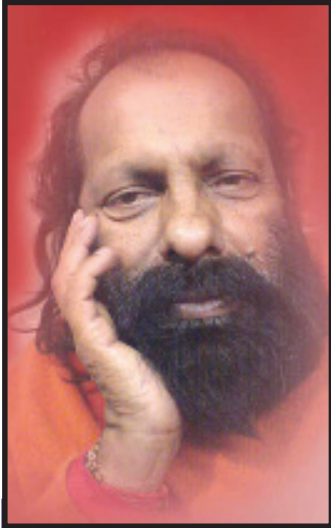
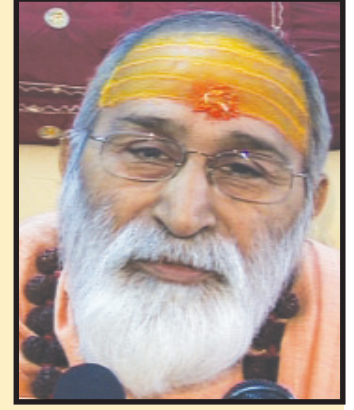
मैं संतों से पूछना चाहता हूँ कि ये कौन सी बात है? ये क्या है कि गुरु शिष्यों का भेद नहीं रहा? पहले कैसे शिष्य थे? अब कैसे शिष्य हैं? क्या परिवर्तन है? बस इसका मार्गदर्शन करें। हमारे पूज्य संत महात्मा को बहुत-बहुत धन्यवाद, प्रणाम।

**आचार्य महामंडलेश्वर श्री शिवेन्द्रपुरीजी महाराज :**  
देखिये समाज की जो संरचना है, इसमें परिवर्तन होते रहते हैं। अब पचास वर्ष पूर्व हम लोग साधु का जीवन व्यतीत करने का निश्चय किये, तब उस समय

गुरुजनों के द्वारा जो हम लोगों की शिक्षा दीक्षा थी वो भिन्न प्रकार की थी। आज के परिवेश में देखा जाये तो उस समय जो प्राचीन परंपरा थी, उस पर ज्यादा ध्यान देते थे। आज बहुत अंतर हो गया है। आज इस तरीके की व्यवस्था हम अपने शिष्य के साथ भी नहीं

कर सकते, क्योंकि वो पूरा का पूरा समाज ही वैसा हो गया है। तो किसी एक के साथ इस तरीके का व्यवहार नहीं किया जा सकता है। अब समाज में जो प्रचलित बातें हैं, उन्हीं को ध्यान में रखकर के साधना की बात की जा सकती है। पहले साधुता की बात प्रधान थी।

व्यवहारिक बात कम थी, आज व्यवहारिक पक्ष को ज्यादा अगत्यता दी जाती है। साधुता को कम, तो अंतर तो इस तरीके से बहुत आया है और ये व्यक्ति का अन्तर नहीं है, बल्कि एक सामाजिक अंतर है, जिसको सभी लोगों को स्वीकार करना पड़ता है।



**प्रश्न :** संतों से मेरा एक प्रश्न है कि आपने जीवन में कोई ऐसा चमत्कार देखा है? ऐसा चमत्कार आपके जीवन में हुआ है? आपका जीवन चेंज हो गया, परिवर्तन आ गया? और ये चमत्कार लोगों के लिए आशीर्वाद समान भी हो सकता है। तो कृपया आप बतायें आपने कौन सा चमत्कार देखा है?

**रामायण टी. वी. सीरियल के लंकेश अरविंद त्रिवेदी के दूसरे प्रश्न का उत्तर देंगे देशी विदेशीभक्तों में लोकप्रिय वरिष्ठ महामंडलेश्वर श्री पाइलट बाबाजी:**

## कोई भी मनुष्य चाहे तो सिद्धियां उपलब्ध कर सकता है- वरिष्ठ महामंडलेश्वर श्री पाइलट बाबाजी

**पाइलट बाबाजी :** चमत्कार तो मैंने बहुत किया है, मैं ही नहीं हम समाधी पुरुष हम चाहे तो इस शरीर को छोड़ कर किसी दूसरे शरीर में जा सकते हैं, हम चाहे तो ये शरीर छोड़कर दूसरा शरीर प्रकट कर सकते हैं। ये सब चीजें हमने बहुत बार समाधी में प्रवेश करके किया है। हमने शरीर को गायब

कर दिया था। ये सब चीजें तो हमारे अंदर हैं। हम लोग ध्यान में बैठेंगे तो शरीर को छोड़कर दस पांच फिट ऊपर आ सकते हैं। ये सब स्वाभाविक रूप से हम लोगों से हो जाता है और हमें बहुत लोगों को आकाश में गमन करते हुए संत महात्माओं को आकाश मार्ग से आते हुए जल पर चलते हुए

जल पर बैठे हुए अनेको, प्रकार के संतों की खुबियों को देखा है। मैंने देखा है कि नदियों पर उनको तैरने की जरूरत नहीं। ऐसे चलते हैं कि जैसे जमीन पर चल रहे हैं। मैंने ये देखा है कि आसमान से उतर रहे हैं। दस फिट दूरी पर और आकर ओम नमो नारायण कर रहे हैं, ऐसे बहुत महात्माओं

को देखा है। मनुष्य के अंदर बहुत सी दुर्लभ और दिव्य शक्तियां छुपी हुई हैं। अगर कोई भी मनुष्य साधारण हो असाधारण हो इसका कोई फर्क नहीं पड़ता, अगर वो साधक बन करके चाहे तो उन सिद्धियों को उपलब्ध कर सकता है, संसार की सारी सफलताएं सिद्धियां हैं। अच्छा

व्यापारी बनना, अच्छा डॉक्टर बनना, अच्छा वैज्ञानिक बनना। अच्छा किसान बनना एक प्रकार की सिद्धियां हैं और हर किसी के अंदर में छिपी हुई है, वो सबको जगाया जा सकता है और चमत्कार दिखाया जा सकता है। चमत्कार घट जाता है। चमत्कार हो जाता है और चमत्कार दिखाया जाता है।



सुख शांति समृद्धि मासिक के दर्शकों की ओर से संगीतकार कल्याणजी आनंदजी में से श्री आनंदजी भाई और उनकी धर्मपत्नी जी का बच्चों के लिए प्रश्न

## धर्म में यात्रा का महत्व क्या है?

“मैं साधु संतों से यह पूछना चाहती हूँ कि धर्म की यात्रा करने लोग जाते हैं, लेकिन इसका मतलब बच्चे ठीक से समझ नहीं पा रहे हैं, मां-बाप जब बच्चों को कहते हैं यहां दर्शन करो, मंदिर में चलो, तब बच्चे पूछते हैं - इससे क्या फायदा होने वाला है, तो आप से प्रार्थना है कि आप ही इनको समझायें कि यात्रा के लाभ क्या हैं?”

इस प्रश्न का उत्तर देंगे निरंजनी अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री पूण्यानंद गिरीजी महाराज जो चिंतन के गांभीर्य को रसप्रद बनाकर प्रस्तुत करते हैं।



आचार्य महामंडलेश्वर श्री पूण्यानंद गिरीजी महाराज : धर्म में यात्रा का बहुत बड़ा महत्व है,

धर्म यात्रा ही है, धर्म माने धर्म का पहले लक्षण करते हैं, जिस आचरण से जीवात्मा की उन्नति होवे, उन्नति

माने जीवात्मा ऊपर उठे, उसका नाम धर्म है तो स्वाभाविक स्थिति से

ऊपर उठने वाला होने के कारण धर्म अपने आप में यात्रा है, ठीक है अब आपका प्रश्न होगा, धर्म में तीर्थ यात्रा करते हैं, उसमें हल्के तरीके से चिंतन शुद्धि का साधन है, हल्का, ये थोड़ा सा चिंतन को अनुरजित करने में रंग तो है यात्रा लेकिन बहुत बढ़िया पक्का रंग नहीं है, कच्चा रंग है, हमारे यहां तो ये उत्तम सहजा अवस्था उत्तम धर्म क्या है, सहज स्थिति में रहकर परमात्मा की अनुभूति (स्तुत) करो और मध्यमा ध्यान धारण मध्यम स्थिति वो है ध्यान धारण के द्वारा समाधि की कोशिश हो, ये

मध्यम साधन है और अधमा तीर्थ यात्रा तीर्थ यात्रा सबसे कमजोर साधन है। जहां जाने पर परमात्मा की स्मृति होने से आपके चित्त में धर्म अदृष्ट की पृष्ठी होती है, लेकिन उत्कृष्ट साधन नहीं है, अनुत्कृष्ट साधन है न करने से करना अच्छा है, ये बहुत बड़ा साधन नहीं है, कमजोर वाला साधन है और तीर्थ यात्रा से तीर्थ में जाने से भगवान की स्मृति होने से आप के अन्तःकरण में पुण्य की मात्रा बढ़ती है, ये धर्म में यात्रा का महत्व है।

## सुख शांति की प्राप्ति के सबसे सरल साधन हमारे जीवन में उपलब्ध हैं- जगतगुरु रामानंदाचार्य श्री हंसदेवाचार्यजी महाराज

हर व्यक्ति सुख और शांति चाहता है। कोई क्लेश नहीं चाहता, परंतु चाहना तो सबकी है, सुख भी मिले, शांति भी मिले। परंतु जब हमारे जीवन के अंदर जो क्रियाएं होती हैं, जो कर्म होते हैं, व्यवहार होता है, आचरण होता है, वहां से सुख और शांति कोशों दूर रहती है। हम सुख और शांति, संसार के पदार्थों में, संसार की चर्चाओं में और भौतिक कार्यों में डूबते हैं। जबकि सुख और शांति नैतिक कार्यों से मिलती है, आध्यात्मिक जीवन में मिलती है और बहुत साधारण सी बात है, कि संसार के पदार्थों से मिलने के बाद में जो आज सुख प्रतीत होता है, वो कल दुख में परिवर्तित हो जाता है।

अगर तुम्हें सुख चाहिए, शांति

चाहिए तो परमात्मा की शरण में जाना पड़ेगा। तो संसार में रहना चाहिए, संसार में बसना चाहिए, संसार में फंसना नहीं चाहिए। जो संसार में फंस जाता है, वो दुखी हो जाता है। जो संसार में बसता है, नहीं फंसता है, वो सुखी हो जाता है। इसलिए जगत में रहते हुए, अनासक्त भाव से जो व्यक्ति जीवन जीता है, वो सुखी रहता है। आसक्ति दुख का कारण है, वासना पुनर्जन्म का कारण है, निरासक्ति सुख का कारण है।

जो व्यक्ति सुख चाहता है, शांति



चाहता है, उसको अपने दिनचर्या को बदलना पड़ेगा। अपने व्यवहार को बदलना पड़ेगा, जो हमारी वृत्तियां हमारा मन संसार की ओर आकर्षित हो रहा है। उसे हटाना पड़ेगा और उनको परमात्मा की ओर लगाना पड़ेगा। ये सबसे सरल साधन हमारे जीवन में उपलब्ध है और भारत में तो सुख और शांति आध्यात्म में ही मिलता है।

सुख शांति समृद्धि मासिक सीरियल के माध्यम से जन-जन तक एक अच्छा संदेश जायेगा। लोगों को अपने

वास्तविक जीवन का पता चलेगा। तो सत्यता का पता चलेगा, वास्तविकता का पता चलेगा, तो सुख शांति समृद्धि मासिक ने एक बहुत अच्छा सद्प्रयास किया है, तो मैं भगवान के चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि सुख शांति समृद्धि मासिक और टी. वी. सीरियल पूरी दुनिया में प्रसारित हो लोगों का जीवन सुखी हो, क्योंकि जो भी काम किया जाता है, वो सुख के लिए किया जाता है। शांति के लिए किया जाता है, समृद्धि के लिए किया जाता है। तो सुख शांति समृद्धि मासिक और टी. वी. सीरियल दुनिया के अंदर सुख और शांति का संदेश दे रहा है, और देता रहेगा ऐसा मेरा हृदयपूर्वक आशीर्वाद है।

आज संसार के पदार्थों से मिलने वाला सुख कल दुख में परिवर्तित हो जाता है, संसार में बसना चाहिए, फंसना नहीं चाहिए



# स्वर्ग और नर्क क्या है?

स्वर्ग और नर्क के विषय में हमारे शास्त्रों में बताया है कि जिनमें वो गुण पाये जाते हैं, वो स्वर्ग के लायक व्यक्ति हैं कैसे स्वर्ग से चित होकर जो व्यक्ति संसार में आता है, उसके इस पवित्र शरीर में चार चिन्ह दिखाई देते हैं।

यदि व्यक्ति उदारपूर्वक अपनी गाढी पसीने की कमाई से दान कर रहा है, दीन दुखियों की सेवा कर रहा है और लोक कल्याण के कार्य कर रहा है, तो समझिए वह स्वर्ग के लायक व्यक्ति के लक्षण हैं। यदि वाणी उसकी मधुर है और अगर वो देवी-देवताओं के अर्चन वंदन करता है, पित्रों का तर्पण विधि विधान से करता है, ऐसा व्यक्ति जो है। वो स्वर्ग के लायक व्यक्ति माना जाता है, स्वर्ग के लायक व्यक्ति माना जाता है। स्वर्ग के लायक व्यक्ति के लक्षण माने जाते हैं, इससे सिद्ध होता है, स्वर्ग हमारे यहां है। इसके विपरीत जो गुण व्यक्ति में पाये जाते हैं वो नर्क के लायक है। नर्क किनको मिलता है, इसके विषय में शास्त्रों में कहा गया है जो लोग जुआ खेलते हैं, कुछ लोग कहते हैं महाराज हम तो साल भर में एक बार दीपावली के दिन हाथ फेरते

## इस प्रश्न का उत्तर देंगे अग्नि पीठाधिश्चर आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री रामकृष्ण जी महाराज



हैं, मगर ये तो बहुत गलत बात है, जुआ खेलना बहुत बुरी चीज है और जो मांस भक्षण करते हैं, वो भी बुरी बात है। हम देखते हैं, डॉक्टर हमारे आपके स्वास्थ्य लाभ के लिए इंजेक्शन लगाता है, थोड़ी सी छोटी सी चीज से हम आप चीख भरते हैं, जबकि डॉक्टर का भाव उत्तम है, कि वो आपको स्वास्थ्य लाभ प्रदान करना चाहता है। आपके स्वास्थ्य को ठीक लाभ मिले।

इसलिए वो आपको इंजेक्शन लगाता है, जब उसका भाव उत्तम है, तब आप चीख भरते हैं, जब किसी प्राणी को आप हलाल करने के भाव से उस पर कोई शस्त्र चलाते

हैं, तब उसकी आत्मा को कष्ट होता है। तो आप ये समझो कि आपको भी कभी आत्मा में सुख और शांति मिलेगी और शराब पीना, शराब पीने से बात ये है कि सबसे पहले धन की बर्बादी होती है, उसके बाद जब ग्रहण करता है व्यक्ति का धर्म जाता है और उसके बाद उसका जब वो प्रभाव दिखाता है, तो मानसिक विकृति होती है, जब मानसिक विकृति आती है, व्यक्ति में तो वह उल्टा-पुल्टा काम करता है। जिसके मरने के बाद लोग उसको याद करें, उसकी कीर्ति हो वो अमर माना जाता है और जिसके मरने के बाद लोग दिवाली

मनाने लगे, समझ लो उसकी अपकीर्ति है, तो अच्छा काम करें। जब आदमी शराब पियेगा, उल्टे पुल्टे काम करेगा तो उसकी समाज में अपकीर्ति होगी, तो जिंदा रहते मरे के समान रहेगा। कहते हैं एक बार की बात है कोई राजा जा रहा था, हाथी पर बैठे, दो चार शराबियों ने उससे झूमते, लटकते पूछा अबे हाथी वाले हाथी बेचेगा, उस वक्त महाराजा ब्रिटिश गर्वमेंट का जमाना था, तो राजा ने कहा सिपाहियों पकड़ो इसको हवालात में डाल दो। जब उसको हवालात में डाल दिया गया, मच्छरों ने

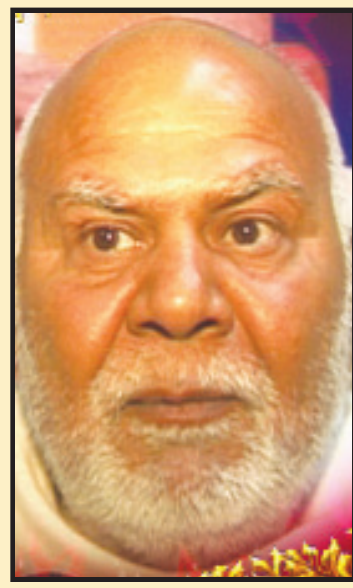
काटा, खटमलों ने काटा, रात में टंड भी लगी होगी। सुबह राज दरबार में उसको बुलावा हुआ, तो उसको याद आया अरे हमसे तो बहुत बड़ी गलती हुई, बहुत बड़ा अपराध हो गया। उस समय महाराज ब्रिटिश गर्वमेंट का जमाना था, उसने सोचा ऐसा न हो कि राजा फांसी के फंदे पर न लटका दे। जब उसको बुलाया तो राजा ने पूछा? हाथी खरीदोगे, तो वो बोला, हुजूर खरीदने वाला तो उतर गया, हम थोड़ी खरीद रहे थे, हमारी खोपड़ी पर जो मदिरा का नशा था, उतर गया। इसलिए मदिरा नहीं पीनी चाहिए और वैश्याओं के संसर्ग में जो व्यक्ति रहता है, जो शिकार खेलते हैं, जो चोरी करते हैं, बुरा कर्म करते हैं, निदित कर्म करते हैं। कुत्सित कर्म करते हैं। कहा गया है, काम, क्रोध, लोभ आदिसकल मोह की धार, तिनमे अति दारण दुःखद माया रूपी नार, तो सुख चाहो आपने वस्तु त्यागो, चोरी, चुगली और परायी नार तो उसे नर्क की प्राप्ति होगी। इसलिए जो व्यक्ति श्रेष्ठ कर्म करते हैं, उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है, जो खोटे कर्म करते हैं, उन्हें नर्क की प्राप्ति होती है।

## आशा के पुरुषार्थ से ही निराशा का प्रतिकार होगा-संत श्री ज्ञानदासजी महाराज

युवावस्था में यदि कठोर नियमावली का पालन किया जाये तो युवा वर्ग सृजन-मार्ग का निर्देश बन जाता है। ऐसे व्यक्तियों को सामने आकर साहसपूर्वक स्वीकारना चाहिए-जिन्हें लगता है कि यदि हमने युवावस्था में अमुक गलती न की होती तो, आज हम कहीं, कुछ और होते! ऐसे लोगों का मार्गदर्शन वह कर दिखायेगा जो उपदेश नहीं कर सकता।

आज का युवा गलत दिशा की ओर बढ रहा है। इच्छाओं का कद बढ़ने के कारण लाइफ लाइन छोटी हो गई है। अशुद्ध खान-पान से दृष्टि और मन की वृत्ति बदल रही है। सब विचार एवं भावनाओं का खेल है, किंतु बोध जागृत होने पर क्षति से बचा जा सकता है। सुखी जीवन की कला सदाचरण और

## बच्चों की नियमावली कैसी होनी चाहिए?



सद्विचार से ही प्राप्त होती है। विचारकों, संतों, मनीषियों की संगति और मेडिटेशन के द्वारा मनोबल में वृद्धि होती है। किसी

भी प्रकार की क्षतिपूर्ति में मनोबल की भूमिका अहम् होती है। किसी भी प्रकार की निराशा का प्रतिकार करने के लिए आवश्यक है आशा के

पुरुषार्थ को गति दी जाये।

फूलों का दो ही धर्म है - खिलना और महकना! जिस फूल में दोनों ही धर्म हैं वह देवों की आभा बन जाता है, अन्यथा इसकी परिणति अनिश्चित है। बच्चे भी फूल की ही तरह हैं, उनके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास हो, उनमें दिव्यता की सुवास हो-इसके लिए समाज के हर वर्ग की सम्मिलित पहल आवश्यक है।

बाल्यावस्था को दो भागों में बांटकर बच्चों की नियमावली बनाई जानी चाहिए। पाँच वर्ष तक माता-पिता व परिवार के सदस्यों द्वारा बालक को भरपूर समय और स्नेह देकर पालन किया जाना चाहिए। पाँच वर्ष से बारह वर्ष तक संस्कार-पोषण हेतु कठोर-नियमावली का अनुसरण होना चाहिए। यदि ऐसा हुआ तो कुसंस्कार जीवन पर्यंत हावी नहीं होंगे।



# भारत के संत महात्माओं के बल पर विश्व पतन से बचा हुआ है-जानकी दादीजी



## प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका- राजयोगिनी दादी जानकी जी :

हमारा भारत देश ऋषि, मुनियों, संत महात्माओं का देश है। उनके त्याग, तपस्या और पवित्रता के बल से पूरा विश्व पतन की कगार पर पहुंचने से बचा हुआ है। एक एक संत का जीवन दर्शन, गृहस्थ में रहने वालों का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें प्रभु मिलन की प्रेरणा देता रहता है। हर एक के चिंतन, चरित्र और व्यवहार में महान परिवर्तन लाता है।

## विद्यालय की सह-मुख्य प्रशासिका : राजयोगिनी दादी गुलजार जी :

विद्यालय की भागिनी संस्था राजयोगा एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउंडेशन की धार्मिक प्रभाग बिना किसी रंगभेद, जातिभेद, सर्व आदरणीय रहनुमाओं को एकमंच पर एकत्रित कर संत सम्मेलन व सर्वधर्म सम्मेलन के द्वारा श्रेष्ठ समाज की संरचना में सकारात्मक योगदान दे रहा है। समाज में प्रेरणा स्रोत बने यही हमारा साधुवाद।



## विद्यालय की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी :

हम सब जानते हैं कि जन मानस पर धर्म नेताओं का बहुत गहरा प्रभाव होता है। विद्यालय का तटस्थ मंच धर्म नेताओं को धर्म से जुड़े गुरुओं संतों, पुजारियों, पंडितों, ज्योतिषियों, कर्मकांडियों को धर्म संस्थाओं के ट्रस्टियों, कार्यकर्ताओं और आस्थावान धार्मिक लोगों को



एक साथ लेकर श्रेष्ठ विचारों की चेतना का प्रसार करता है।



## धार्मिक प्रभाग के मुख्यालय संयोजक : श्री बी. के. रामनाथ भाई

कुंभ मेले में आये हुए यात्रियों से मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि ज्ञान को न सिर्फ सुनें परंतु प्रकटीकरण जीवन में ज्ञान की धारणा करें, मन को समर्थ विचारों में विचरित करें, जिससे मन शुद्ध होगा, बुद्धि शुद्ध होगी, कार्य श्रेष्ठ होंगे। दृढ़ संकल्प करें। अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाने के हम जवाबदार हैं। तभी जीवन का विकास होगा। तो आइये, श्रेष्ठ संकल्पों के द्वारा आत्म उन्नति कर भविष्य उज्ज्वल बनायें।



## धार्मिक प्रभाग की अध्यक्षा प्रेम बहन :

प्रभाग के कार्य द्वारा एकता-प्रेम, विश्व बंधुत्व, सहयोग के भाव जागृत हों, वसुधैव कुटुम्बकम हित भाव के लिए संसार के सभी रहनुमा प्रेमसुत्र में सद्भाव से कार्य करें -यही हमारा शुभ संकल्प है। प्रत्येक लोगों में एकता प्रेम विश्वबंधुत्व, सहयोग के भाव जागृत हो, नई चेतना जागृत हो।



## धार्मिक प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका राजयोगिनी बी. के. मनोरमा बहन:

समाज की प्रत्येक इकाई को आध्यात्म से जोड़कर सही दिशा निर्देशन करने का उत्तम प्रयास किया गया है ताकि हर उम्र, वर्ग तथा हर क्षेत्र के लोगों को अनेकानेक लाभालाभ हो व समाज का समुचित विकास हो, उस इकाई का मनोबल बढ़ेगा। सत्यनिष्ठ और चरित्रवान नागरिक का निर्माण ही राष्ट्रहित है। इस कार्य का बहुत सुन्दर परिणाम सामने आ रहा है।



## धार्मिक प्रभाग के कार्यकारी समिति की सदस्य गोदावरी दीदी :

महाकुंभ में पधारे हुए सभी भाविक आत्माएं अभी आपके अंदर रही हुई (बीमारी) बुराइयां, अनेक दुर्गुण, दुराचार भरा व्यवहार, काम, क्रोध, लोभ, मोह अंधकार जो नर्क के द्वार समान हैं, उनको छोड़ो और अनेक जन्मों के पाप कर्मों से मुक्त होने के लिए दिव्य गुण जैसे सत्यता, नैतिकता, पवित्रता, धैर्यता इत्यादि गुणों से भरपूर बनकर सर्वगुण संपन्न सोलह कला संपूर्ण देव तुल्य बन जाओ। यही आहार, व्यवहार, सदाचार है, जो मानवीय मूल्यों का सही प्रभु उपहार है।

## धार्मिक प्रभाग की कार्यकारी सदस्य (मालाड मुंबई) कुन्ती बहन

इस महाकुंभ के पर्व पर पधारे हुए सर्व साधुसंत, श्री महामंडलेश्वर, श्री आचार्य महामंडलेश्वर, श्री शंकराचार्यजी का हार्दिक सन्मान करते हैं। आप सभी महान प्रतिभा है जिन्होंने अपनी पवित्रता के बलबूते पर स्वयं के साथ साथ भारत भूमि की भी शान रखी है। आप जैसी महान हस्तियों के सानिध्य में श्रेष्ठ धर्म, श्रेष्ठ कर्म, श्रेष्ठ व्यवहार करने की प्रेरणा सबको प्राप्त हो रही है। प्रणाम।





# मां-बाप की सेवा करने से सुख शांति समृद्धि मिलेगी : संत श्री आशाराम बापू

सुख शांति समृद्धि मासिक अपने उद्देश्य में सफल हो ऐसी शुभकामना और ईश्वर से प्रार्थना।

सुख शांति समृद्धि को पाना हर एक का जन्म सिद्ध अधिकार है, लेकिन उसके लिए इंसान को सत्संग करना होगा। संत और महापुरुषों के द्वारा दर्शाये गये मार्ग पर सहजता से चलना होगा। ऐसा करने से अवश्य



जीवनोद्धार होगा। ज्ञान, भक्ति, कर्मयोग ये तीनों का त्रिवेणी संगम जीवन में प्राप्त करना इंसान का परम ध्येय होना चाहिए। बच्चा और युवाओं को प्रथम कर्तव्य है कि वे मां-बाप का सम्मान करें।

मां-बाप के आदेश का पालन करें, उनकी सेवा करें, इससे उनके जीवन में अवश्य सुख शांति समृद्धि आयेगी।

## श्रीमान छगन भुजबलजी के द्वारा समस्या की प्रस्तुति और संत श्री रमेश भाई ओझा के द्वारा समाधान

श्रीमान छगन भुजबलजी महाराष्ट्र के राजकारण की अग्रिम हस्तियों में से एक है। वे अपना समर्पित जीवन, निडर स्वभाव और व्यस्त सेवा कार्यों के लिए प्रसिद्ध हैं। ईश्वर के प्रति श्रद्धालु भुजबल जी दिल से मानते हैं कि आज वो जिंदा हैं, आज वो सफल हैं, क्योंकि गरीबों की दुआ उनके साथ है। सुख शांति समृद्धि मासिक की प्रार्थना पर उन्होंने पाठकगण के सामने आज की एक समस्या प्रस्तुत की जिस पर हमने भारत के प्रखर संत पूज्य श्री रमेशभाई ओझाजी को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रार्थना की; प्रस्तुत है - पाठक परिवार के लिए अमृत संजीवनी



## संस्कार दारिद्र्य संपत्ति दारिद्र्य से भी खतरनाक

### अग्रणी राजकीय प्रतिभा

#### छगन भुजबल जी :

आज के समाज में एक तो शहर बढ़ रहे हैं, नगर बढ़ रहे हैं और नगरों में जो है रहने के लिए इतनी जगह नहीं है। पहले जो है फैमिली एक जगह रहती थी, अब शादी हो गयी, लड़का दूर चला गया, मां-बाप को छोड़कर।

वो जो फैमिली एक जगह रहती थी, वो अब नहीं रही। ये इसलिए हो रहा है कि हमको जो हमारे पुराने लोगों से हमको और हमारे बच्चों को जो एक शिक्षा मिलती थी, एक सांस्कृतिक देन मिलती थी, हमारा जो भी एक हिंदुस्तान का जो कल्चर है, कल्चर सिखाने की बात होती

थी, वो आज नहीं रही, आज बस घर में जो है, सिर्फ मर्द औरत है और बच्चे हैं। मर्द काम पे जाता है औरत काम पे जाती है। बच्चे कोई कॉन्वेंट स्कूल में जाते हैं। क्या हो रहा है? पता नहीं, हमारी धरोहर क्या है? हमारा देश क्या है? हमारी संस्कृति क्या है? किसी को कोई पता नहीं है।

#### संत श्री रमेश भाई ओझा:

वर्तमान जीवन शैली के कारण संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं, हम जॉइंट फैमिली में नहीं रहते हैं। अब न्युकिलियर फैमिली का जमाना आया, इसके चलते आर्थिक रूप से तो मानव और सम्पन्न होने लगा है लेकिन जहां तक संस्कारों की बात है वह गरीब होता जा रहा है। भुजबलजी, आप की बात बिल्कुल

सही है कि किसी जमाने में संयुक्त परिवार में रहने के कारण परिवार के



बड़ों से, बुजुर्गों से और घर का जो सामान्य परिवेश था, उससे बालक को जो संस्कार मिलते थे, बच्चे

जो सीखते थे, वह व्यवस्था आज कल नहीं रही। बदलते परिवेश में हम को एक नयी व्यवस्था ढूंढनी होगी। अपने अपने वैचारिक और अपने भावनात्मक पिंड को सच्चा पोषण मिले, इसलिए। आसपास मंदिर है, मस्जिद है, धर्म स्थानक है, लोग जाते हैं प्रार्थना करते हैं लेकिन इस इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के द्वारा एक और भी काम हो रहा है, और वो है, आध्यात्मिक चैनल्स आपके घर में आने लगे। हम मंदिरों में जाये हम कथा सत्संग में, धार्मिक, आध्यात्मिक प्रवचन में जायें। उस प्रकार के शिविर में हम जाये और अपने घर में भी जिन चैनलों के माध्यम से हमको संत और महापुरुषों का जो एक आध्यात्मिक संदेश

मिल रहा है उनका मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। उसको हम ध्यानपूर्वक सुने और अपने परिवार में उस प्रकार का वातावरण बनाने का संकल्प और सनिष्ठ प्रयास करें। यही एक उपाय है, हम किस चीज को ज्यादा महत्व देते हैं, उस पर सारी बातें निर्भर हैं।

भगवान करे हमारा राष्ट्र आर्थिक रूप से और समृद्ध हो, संपन्न हो, लेकिन संस्कारों और संस्कृति के विषय में कहीं हम बिछड़ ना जायें, नहीं तो ये संस्कार दारिद्र्य संपत्ति दारिद्र्य से भी खतरनाक सिद्ध होता है, इस बात को समझें। परमात्मा इस बात को समझने की और इस मार्ग पर चलने की शक्ति दे ऐसी प्रार्थना।

हमारी धरोहर, हमारा देश हमारी संस्कृति के बारे में आपके बच्चों को पता है?

# योग आपको वो शक्ति देगा जिससे सबकुछ मिल जायेगा

एक विशेष मुलाकात में प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता लेखक और इस्लाम धर्म के प्रचारक कादर खान जी ने योग के बारे में बताते हुए पाठक परिवार की ओर से एक इच्छा प्रदर्शन की कि आपके दर्शकों को योग के बारे में बतायें, तो आइये प्रस्तुत है अष्टांग योग की झलक का अंश :

प्रस्तुत है अष्टांग योग क्या है? इस प्रश्न का आज उत्तर देंगे स्वामी श्री कर्मवीर जी महाराज, जिनका सूत्र है योग युक्त, रोग मुक्त मानव।



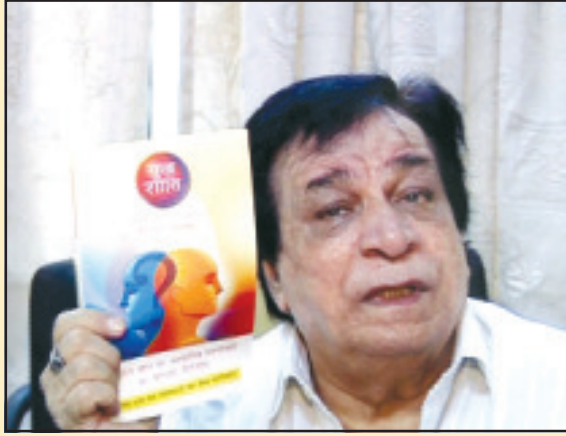
## स्वामी श्री कर्मवीर जी महाराज :

महर्षि पतंजलि ने हमें एक विद्या दी, जीने की कला और उसको उन्होंने अष्टांग योग के नाम से प्रतिपादित किया। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधी, समाधि का अर्थ, हमारे जीवन का समाधान कैसे हो? हम जो संसार में आ रहे हैं फिर जा रहे हैं, उसका समाधान करना चाहते हैं और ये हो सकता है, योग से संभव और इसमें यम पांच है - अहिंसा सत्य, अस्ते, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, यमा। यदि संसार के लोग इसका अपने जीवन में पालन करें, तो पूरे विश्व के अंदर अमन चैन हो सकता है।

हिंसा ८१ प्रकार की है। हम सोच नहीं सकते हैं, हम अपने जीवन में कहां अहिंसा कर रहे होते हैं। तो ८१ प्रकार की हिंसा हमारे जीवन में होती है। यदि योगाभ्यास कर रहे हैं तो उस हिंसा से बच जाते हैं। समाज में एक अच्छी व्यवस्था देने के लिए ये यम है अहिंसा सत्य, अस्ते, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, यम और पांच नियम है, साज, संतोष, तप, स्वार्धर्म, ईश्वर परिधान, इनको भी हम अपने जीवन के आंतरिक जीवन से संबंध रखते हैं और अंदर से हमें पवित्र बनाते हैं। फिर यम नियम आसन हम करते हैं। महर्षि पतंजलि केवल एक सूत्र देते हैं। आसन के स्थान पर स्थिर सुखम् आसनम् की जिस आसन में हम बैठे हुए हैं और बैठ करके योगाभ्यास कर रहे हैं। वो सिद्धासन, पद्मासन और सुखासन यही आसन है, तो इस आसन को हम परिपक्व बनाये और इसमें इसे सिद्ध करे, जिसमें बैठकर एक लम्बे समय तक साधना कर सके। यम, नियम, आसन, प्राणायाम। प्राणायाम का मतलब है - हमारे प्राणों को आयाम देना। हमारा जो शरीर है, इसमें १० प्राण एक ही समय काम करते हैं। प्राण अपान, समान उदान, त्यान नाग पूर्ण विकल, देवदत्त, धनंजय ८१ दस के दस प्राणों का पोषण करता है। जो हम श्वास ले रहे हैं

## फिल्म अभिनेता, लेखक और इस्लाम धर्म के प्रखर प्रचारक श्री कादरखान का संदेश

सुख शांति समृद्धि मासिक के इस अंक के मुख्य अतिथि हैं- भारतीय चलचित्र जगत के इतिहास का एक महत्वपूर्ण प्रकरण जिसे कोई भूल नहीं सकेगा। वो हैं प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता और लेखक श्री कादर खान! कादर खान जी ने जब फिल्मों में बंदूक उठाई तो खून की नदियां बहने लगी। जब उन्होंने कलम उठाई तो लोगों के चेहरे पर खुशियों की बाढ़ आ गई और अब उन्होंने अपने हाथों में कुरान को थामा है, ताकि आदमी इंसान बन सके। आधुनिक



समय के फकीर की तरह वे वर्तमान में देश-विदेश की विविध युनिवर्सिटियों में इस्लाम धर्म के कन्सल्टन्ट प्रोफेसर की सेवाएं दे रहे हैं तथा अनेक ग्रंथ लिख रहे हैं, उनका सुख शांति समृद्धि को संदेश प्रस्तुत है : इंसान को इस समाज में जीने का जो तरीका है वो ये सिखाएगी। बगैर किसी के साथ

चले हुए, बगैर ऊपर वाले की उंगली थामे हुए, बगैर नियमों के छत्रछाया में चले हुए आप जिंदगी में कुछ नहीं हैं। आप उसके नियमों का पालन कीजिए और धर्म के बगैर तो इंसान कहीं जा ही नहीं सकता। धर्म जिसमें आप बहकर एक ऐसी जगह जाते हैं, जिसके बारे में आप कभी सोच नहीं सकते। धर्म एक सहारा है, एक बहुत बड़ा हाइवे है, एक नदी है जो आपको कहीं पहुंचाती है। एक हवाई जहाज है, जो आपको लैंड करता है, किसी बेहतरीन जगह पर अगर आप इससे नहीं गये तो आपका जीवन बेकार है।

## कादरखान का नौजवानों को संदेश :

योग इसमें वो सब प्राणायाम है, वो तरीके हैं जिसमें इंसान ध्यान लगा सकता है। ध्यान लगा कर किसी ऐसी दुनिया में जा सकता है, जो उसको आंखों से नजर नहीं आती है और वो उसको अपने प्रभु के पास पहुंचा सकता है। उसके दिमाग में वो सब बातें आ सकती हैं। ये अर्थिग है तो हम उसमें बिजली के तार लगाते हैं, वो तार को हम जमीन में गाड़ देते हैं, ताकि बिजली गिरे तो सीधे निकलते हुए जमीन में चले जाए। इसी तरह जब हम कोई योग का उपयोग करते हैं, तो हमारा ध्यान जो है उस इलाके में चला जाता है, उस जगह जा सकता है जहां जाना मुमकिन नहीं है और उस ध्यान में इंसान लीन होकर अपने आप को धो सकता है। सका मन धुल जाता है और स्वास्थ्य में जितनी गंदगियां हैं, वो निकल जाती है। जैसे ही ऊपर वाले का हाथ लगता है, वो आपके अंदर से बुराईयां निकालता है, जब बुराईयां निकली हैं, तो बीमारियां भी निकलती हैं और उस बीमारी के निकलते ही इंसान की सेहत अच्छी होने लगती है। उसका विचार अच्छा होने लगता है। उसकी गंदगियां पाप जो है, मन से निकलने लगती है। तो योग एक ऐसी चीज है जो हमारे नौजवानों को एवं बड़े लोगों को बैठ कर करनी चाहिए, जिससे अपने अंदर वो शक्ति पैदा करे वो ताकत पैदा करे जो इंसान को उपर वाले से मिलती है, उससे मिल लिए तो आपको सब कुछ मिल गया।

और छोड़ रहे हैं, तो हम इस प्राणायाम की क्रिया के द्वारा हमारे १० के १० प्राण पोषित होते हैं और हमें आरोग्य मिलता है। जीवन के अंदर जो हमारी जीवन शक्ति है, उसको हम बढ़ाते हैं, तो ये प्राणायाम है- यह नियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार, प्रत्याहार कहते हैं कि हमारी जो इंद्रियां जो बाहर की ओर भाग रही हैं। ज्यादा

विषयों में जाना चाहती है। उसमें हम एकाग्रता लेकर के आए और केवल ईश्वर के विषय में चिंतन करें, तो ये प्रत्याहार फिर धारणा-एक स्थान पर मन को केंद्रित करना। जैसे कई भाई त्राटक करने की बात करते हैं और अब अपने आजन चक्र में या सहस्ता चक्र में मन को केंद्रित करें तो ये धारणा है फिर ध्यान

जब हमारा मन केंद्रित हो जाये एक बिंदु पर तो इसको महर्षि पतंजलि ने ध्यान की संज्ञा दी है और फिर कहा है कि इसके बाद में धारणा ध्यान समाधी तो फिर समाधी अंतिम हमारा एक पडाव है, जहां पर हम पहुंचना चाहते हैं। वहां पर जीव अपने आप में मस्त हो जाता है और ईश्वर का सानिध्य करते हुए संसार

को भूल जाता है और फिर ऐसे दुष्कर्म नहीं करता जिससे जैसे संस्कार उसको मिले। वो कर्म तो करता है लेकिन अनासक्त भाव से कर्म करता हुआ आगे बढ़ता है और पीछे के कर्मों को भोग लेता है और आगे नया संस्कार पैदा नहीं करता और मुक्त हो जाता है ये अष्टांग योग की विधा है, जो महर्षि पतंजलि जी ने हमें दी है।



## भजन सम्राट अनुप जलोटा जी ने बच्चों के विकास के लिए माता-पिता से प्रार्थना की इस उपलक्ष्य में पूज्य स्वामी गुरु श्री शरणानंदजी महाराज की प्रेरणात्मक कहानी



सुख शांति समृद्धि मासिक की एक विशेष मुलाकात में भजन सम्राट अनुप जलोटा ने अपने संदेश में समाज के माता पिता से प्रार्थना करते हुए कहा :

बच्चों का अधिकांश समय जब वो स्कूल से आते हैं तो उनका अधिक समय माता-पिता के साथ अवश्य गुजरना चाहिए। माता-पिता उनसे संस्कारों की बातें करें, वैल्यूज की बातें करें, उनको समझाएँ कैसे दूसरे का आदर करना है, कैसे गरीबों की मदद करनी है। किस तरह से लोगों को दान दीजिए। किस तरह लोगों को प्यार दीजिए। स्नेह दीजिए।

यदि हमने ये सब नहीं किया तो बच्चों को ये सब संस्कार स्कूल से नहीं प्राप्त हो पायेंगे। ये माता-पिता से ही प्राप्त होंगे। हमें ये

समय देना ही होगा। बच्चों को समझाने के लिए श्रवण कुमार की कहानी सुनानी चाहिए। इस प्रकार की कहानियाँ सुनाइये जो उनके जीवन में घर कर जाये वो हमेशा कुछ भी करने से पहले उस कहानी को याद कर लें और वैसा कार्य करें।

इस संदेश में अनुपजी ने माता-पिता को एक जिम्मेदारी दी है और शास्त्र कहते हैं संत बच्चों के लिए माता-पिता के समान हैं। जब अनुपजी से हमने प्रस्ताव रखा कि आपके संदेश के उपलक्ष्य में रमणरेती के स्वामी श्री गुरु शरणानंदजी महाराज बच्चों के माता-पिता को एक कहानी सुनायेंगे तो उन्होंने आदर के साथ हर्ष व्यक्त किया। आइये इस हर्षोल्लास के अवसर पर स्वामीजी से कहानी सुनें और प्रेरणा लें।

## जिस घर में सुमति और सहमति हो वहां से लक्ष्मी जा नहीं सकती

**गुरुदेव श्री शरणानंदजी महाराज :**

राजा अश्वजीत, रात्रि में विश्राम कर रहे थे, स्वप्न में उन्हें राज लक्ष्मी ने कहा - बेटा हमको तुम्हारे यहां से अब जाना है, तुम हमसे कोई वरदान मांग लो। जाते-जाते मैं तुम्हें वरदान दे के जाऊंगी, तो राजा ने कहा, माताजी आप अनुमति दें तो मैं जरा अपने परिवार में सलाह कर लूं। माता ने कहा - ठीक है, दूसरे दिन परिवार की सभा जुटी और राजा ने पहले दिन का स्वप्न सुनाया तो कई लोग तेज चालाक थे। उन्होंने कहा, सीधे यही वरदान मांग लो कि आप कहीं मत जाओ। किसी ने कहा धन माँग लो। किसी ने कहा - बहुत सी जमीन माँग लो। किसी ने कहा-रत्न माँग लो। राजा को किसी की बात से संतुष्टि नहीं हुई। राजा के परिवार में जो सबसे छोटी बहू थी, राजा ने

उससे पूछा- बेटा तुमने कोई सलाह नहीं दी, उसने कहा, मुझे मांगना हो तो माता से मांगूंगी। मां जैसे आपकी कृपा से आपके रहते हुए चार दिन सुख के हमने हिल मिल करके काट लिए हैं। हमारे परिवार में सुमति बनी रहे, हमारे परिवार में सहमति बनी रहे, उसी प्रकार आपके जाने के बाद चार दिन जो दुख के आये उसमें भी हम हिल मिल के काट लें। जैसे चार दिन हिल मिल के सुख में कट गये, वैसे चार दिन दुख में कट जायेंगे, फिर आपकी कृपा प्राप्त हो जायेगी। हमारे परिवार से सुमति कभी न जाये हमारे परिवार में सदा सहमति बनी रहे।

राजा ने कहा "मांगने लायक तो बात यही है।"

राजा ने जब माता जी रात में आयी, राज लक्ष्मी ने पूछा- बेटा क्या वरदान मांगते हो। राजा ने कहा -मां हमारे परिवार में सुमति बनी रहे। हमारे परिवार में सहमति बनी रहे।



जैसे चार दिन हमने सुख के हिल मिल करके काट लिये हैं, वैसे चार दिन दुख के भी हम हिल मिल करके काट लें, हमारे परिवार से सुमति कभी दूर न हो, हमारे परिवार में सहमति बनी रहे। महारानी पूछती हैं- बेटा तुम मुझे जाने नहीं देना चाहते हो क्या? राजा ने कहा - माताजी मैंने आप को एक बार भी नहीं रोका, आपने कहा है तो सुमति और सहमति का वरदान मांग रहा हूँ।

माता ने कहा - बेटा जिस परिवार में सुमति है, जिस समाज में सुमति

है, जिस राष्ट्र में सुमति है, जहां भी सुमति है वहां से अगर मैं जाना भी चाहूँ तो मैं जा कैसे सकती हूँ? तुमने सुमति का वरदान मांग करके, सहमति का वरदान मांग करके, मुझे सदा के लिए बांध लिया है।

यदि सुमति बनी रहे, यदि सहमति बनी रहे तो हर प्रकार की संपत्ति सहज उपलब्ध हो जाती है, सुख उपलब्ध हो जाता है, सर्व प्रकार की प्रगति का एक मात्र ईश्वर कृपा से प्राप्त हेतु सुमति और सहमति ही है। ये सुमति और सहमति का अभाव मुझे अब अभी ही दिखने लगा है, मेरी प्रभु के चरणों में और आप सब श्रोताओं के चरणों में भी यही प्रार्थना है, अपने पति पत्नी में भाई बहनों में भाई-भाई में परिवार में, बिरादरी में, समाज में, पार्टियों में, सरकारों में, राष्ट्रों में बड़े-बड़े बिजनस टाइकूनों में सहमति बनी रहे जिससे समय राष्ट्र प्रभु की कृपा से नाना प्रकार की सम्पत्तियों का आनंद लेते

हुए अपने आपको सुखी करे, अन्य को सुखी करे।

❖ पवित्रता और दिव्यता प्रदान करने वाली वस्तु कोई भी नहीं, सिर्फ ज्ञान मार्ग है। अविधा के चरण असत्य के आवरण से निवृत्ति ही ज्ञान है। ज्ञान स्वरूप की प्राप्ति भी ज्ञान के आश्रय में ज्ञान के माध्यम से ही होती है।

❖ सृष्टि के गुण दोषों को देखने के बजाये, दृष्टि के गुण दोषों के प्रति सावधान रहना आवश्यक है। कीचड़ लग जायेगा तो धो लेंगे: इस संकल्पना के बजाये उससे बचकर निकलने की सोचें।

❖ स्पर्शद्रिय का गुलाम होने के कारण हाथी, श्रवणद्रिय का दास होने के कारण हिरण, शमा का लोभी पतंगा, घ्राणद्रिय के आकर्षण में बंधा भ्रमर एवं स्वादेन्द्रिय की लोभी मीन अन्ततः मृत्यु को प्राप्त होते हैं। पाँचे इंद्रियों का दासत्व वहन करने वाला मनुष्य कैसे शांति पा सकता है? अस्तु संयम ही शांति की प्राप्ति करा सकता है।

## आर्थिक असमानता को निपटाने में भारतीय अध्यात्मवाद ही सक्षम है

(पृष्ठ १ का शेष) मिथ्या अर्थ निकालकर हिंदुत्व को कमजोर कर दिया गया है। फलतः मंत्र, तंत्र, भूत-प्रेत, झाड़-फूंक, पर्चा, चमत्कार पर विश्वास प्रचलन में आ रहा है। धर्म में अंध श्रद्धा ने अज्ञान को पूर्णता प्रदान कर दी है। अज्ञान ही हमारी सारी समस्याओं का जनक है।

विकास की परिभाषा क्या है? प्रति व्यक्ति पेट्रोल का खर्च? प्रति व्यक्ति आय? या फिर अधिकतम प्रदूषण और सृष्टि स्रोतों के दोहन का नाम विकास है? भारतीय मनीषियों ने विकास का अर्थ दिया है-सादा जीवन उच्च विचार! भौतिकता विकास का पैमाना नहीं हो सकती! संतों का सामीप्य, चरण-स्पर्श, ईश्वर में विश्वास भी विकास को पूर्णता प्रदान करता है। अतः भारतीय अध्यात्मवाद की शरण में रहते हुए विकास की ओर बढ़ें।

## शंकराचार्यजी के मार्ग में कौन-कौन सी समस्याएं हैं?

(पृष्ठ १ का शेष) अब तो नेपाल की तरफ भी खिसकने की संभावना है। प्रतिदिन राष्ट्र का विखंडन हो रहा है। ये सब चुनौतियां ही चुनौतियां हैं। अंग्रेजों ने २०० वर्षों में ९ बार देश का विभाजन किया। श्रीलंका, वर्मा आदि को पाकिस्तान बांग्लादेश को विभक्त किया। लेकिन स्वतंत्र भारत के प्रधानमंत्रियों ने अब तक १२ बार विभाजन किया। कोई ऐसा दिन नहीं जिस दिन भारत का भू-भाग खिसकता न हो, चप्पे-चप्पे पर अराजक तत्वों को वोट बैंक की भावना से सत्ता लोलुप्ता, दूरदर्शिता के वशीभूत राजनेता बसा चुके हैं। कोई भी ख्याति को प्राप्त भारत में ऐसा राजनैतिक दल नहीं है, जिसे हिंदुओं के अस्तित्व आदर्श की राष्ट्र के अस्तित्व आदर्श की चिंता हो, ऐसी स्थिति में प्रमाणित धर्माचार्य है और संवेदनशील है। अपने दायित्व का जिनको परिज्ञान है और दायित्व के निर्वाह में जो दक्ष है और एक प्रकार से जागरूक है, उनको सब ओर चुनौतियां ही चुनौतियां हैं।

## युवा वर्ग की दिशा हीनता के लिए माता-पिता और कार्यपालिका जिम्मेदार

युवा वर्ग दिशाहीन होकर संस्कार-भ्रष्ट हो रहा है, तो इसके लिए माता-पिता और कार्यपालिका भी जिम्मेदार है। चरित्र-निर्माण की त्वरित आवश्यकता है। कच्छप मन वाह्य जगत में आकर आहार ग्रहण करता और अशांत हो उठता है, किंतु अपनी इन्द्रियों को समेटते ही वह शांत हो जाता है। कच्छप की यही वृत्ति युवावर्ग का आदर्श बन जाये तो व्यापक परिवर्तन हो सकता है।

बच्चे भविष्य निधि हैं, माता-पिता व समाज का नैतिक दायित्व

**सुमेरु पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी नरेन्द्रानंद सरस्वतीजी महाराज : बच्चे, वृद्धों की सेवा करें, तो उन्हें आयु, विद्या, यश, बल की प्राप्ति होगी**

है, बच्चों की विद्या और बल तो बच्चे यशस्वी होंगे। इसके लिए बच्चों से वृद्धों की सेवा करवाई



जानी चाहिए। वृद्धों की संगत और आशीर्वाद से उन्हें आयु, विद्या,

यश और बल की प्राप्ति समन्वित रूप से प्राप्त होगी।

हमारी सनातन संस्कृति ने शांति का ही उद्घोष किया है। शांति स्थापित होगी तो सुख की प्राप्ति होगी, सुख आयेगा तो समृद्धि भी आयेगी...। आपका लेखन अशांत-मन-मस्तिष्क को प्रभावित करे! पाठक विकृत साहित्य से विमुख हों, अज्ञान व दुख मिटे!! काशी के कोतवाल इस पत्रिका को उत्तरोत्तर वृद्धि प्रदान करें! यह अपने उद्देश्य में सफल हो! आशीर्वाद-प्रार्थना।



आदर्श जीवन और अमीरी एक साथ संभव है। जमीन में डाला गया एक किलो गेहूँ एक बोरा गेहूँ बनकर या एक टूक गेहूँ बनकर

## आदर्श जीवन और अमीरी एक साथ संभव है

**वरिष्ठ महामंडलेश्वर अर्जुनपुरी महाराज : मां-बाप को प्रतिदिन प्रणाम करोगे तो आशीर्वाद कभी ना कभी तो फलित होगा ही**

वापस मिलता है। सुख मिले तो उसे बाँटो! कई गुना होकर वापस मिलेगा। निजी जीवन में चेक करो-मन, वचन, कर्म और सम्पदा-सुख कितनों को बाँटा? जो देश इस सिद्धांत को मानता है, वही सुख-शांति का मार्ग प्रशस्त करता है।

बच्चे राष्ट्रीय निधि हैं, भविष्य के संरक्षक हैं। माता-पिता का भरपूर

प्यार, भरपूर समय, भरपूर निर्देशन मिलना चाहिए। जो बच्चे जीनियस या विद्वान बनना चाहते हैं, उनके मित्रों को याद रखें। आज के बच्चों को इन्टरनेट की सुविधा मिल चुकी है, किन्तु इससे विकास और विनाश दोनों रास्ते खुलते हैं, इसलिए चेकिंग करें की नेट पर वे बरबादी की राह खोज रहे हैं या विद्वता की? आज

खान-पान, मनोरंजन के साधन-सभी विकृत हो चुके हैं, इसलिए बड़ों को, संतों को प्रणाम करने की परंपरा को विस्मृत न करें। प्रतिदिन प्रणाम करेंगे तो आशीर्वाद कभी न कभी तो फलित होगा ही।

युवा वर्ग स्वयं को माता-पिता, धर्म, संस्कृति और राष्ट्र के प्रति समर्पित समझे। कुछ पाना है तो

पहले पात्रता विकसित करें, तब इच्छापूर्ति की कामना करें। फिर जो चाहें-बन सकते हैं। फिक्सड डिपॉजिट के लिए युवावस्था ही सर्वोत्तम है। यदि ऊर्जा संचय, शक्ति संचय बेहतर ढंग से किया तो सदैव सुख प्राप्त होता रहेगा। चरित्र सुरक्षित रहा तो संस्कृति व राष्ट्र गौरवांवित होते रहेंगे।

## संत राम बापा : बच्चों को घर पर छोड़कर सत्संग में जाने वाले मां-बाप दोषी हैं

नारी धर्म रक्षक है, इसलिए न तो अपशब्द उसके लिए हैं और न ही उस पर उंगली उठाई जानी चाहिए। समाज में ऐसे भी माँ-बाप हैं जो लोभी हैं, व्यस्त हैं, मृत्यु की स्वचाई से, वैराग्य से डरते हैं। सत्संग में जाते समय बच्चों को घर पर छोड़ दिया जाता है। किंतु वही बच्चा जब बड़ा हो जाता है तो मानता नहीं! हर बालक का घनिष्ठ परिचय इनके साथ होना चाहिए, माता-पिता, शिक्षक और सद्गुण!! जब बालक इन्हें जानेगा तभी



इन्हें मानेगा भी! और तभी कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा।

## सत्संग का जीवन में अमल करो : श्री पंच अग्नी अखाड़े के सभापति श्री गोपालानंदजी बापु

साधु संतों की अमृत वाणी ईश्वर के आशावादी के जैसी होती है। अच्छे साधु संतों की बातें मासिक में छापोगे तो पाठकों में अवश्य लाभ होगा। आपके पाठकों से यही कहना चाहूंगा कि ईश्वर पे भरोसा रखकर अच्छी बातों का, सत्संग को जीवन में उतारोगे तो सुख शांति समृद्धि अवश्य मिलेगी। जीतु भाई को आशीर्वाद।



## पत्रिका का उद्देश्य जरूर सफल होगा : श्री पंच अग्नि अखाड़े के महामंत्री श्री गोविंदानंद ब्रह्मचारी

वर्षों की तुम्हारी आराधना सफल हो रही है, जीतु भाई, हिंमत मत हारना। तुम्हारे द्वारा अन्यों के जीवन में सुख शांति समृद्धि फैले ये तुम्हारा उद्देश्य एक दिन जरूर सफल होगा। पाठक परिवार भी ख्याल रखे कि सुख शांति समृद्धि की प्राप्ति के लिए गलत मार्ग से कुछ हासिल नहीं होगा। सत्य के मार्ग पर पुरुषार्थ के साथ साथ सेवा करने से अवश्य सुख शांति समृद्धि मिलेगी।





## सुख शांति समृद्धि मासिक उत्तम प्रशंसनीय कार्य कर रहा है- संत श्री कल्याणदासजी महाराज

महाकुंभ के पावन अवसर पर पत्रकार जीतु सोमपुरा जी सुख शांति समृद्धि पत्रिका में संत महात्माओं के साथ प्रश्नोत्तरी का विशेषांक प्रकाशित कर रहे हैं। ये जानकर अत्यंत खुशी हुई। मानव जीवन में सुख शांति समृद्धि ये तीनों की आवश्यकता है। इसी की ओर ध्यान रखकर ये उत्तम प्रशंसनीय कार्य हो रहा है। अपने नाम के जैसे गुण धारण करके पत्रिका सबके जीवन में सुख शांति समृद्धि की वर्षा करे, ऐसी ईश्वर से प्रार्थना। सोमपुरा जी को भी सुख शांति समृद्धि प्राप्त हो ऐसे खूब खूब आशिर्वाद।

## मासिक के माध्यम से आध्यात्मिक, सामाजिक और व्यावहारिक मार्गदर्शन मिलेगा- पूज्य श्री अखंडानंद सरस्वतीजी महाराज के कृपापात्र शिष्य श्री गिरीशानंद सरस्वती जी महाराज

आपने नाम बहुत सुंदर दिया है "सुख शांति समृद्धि" इसमें आपने पूरे व्यवहार और परमार्थ को कवर कर लिया है। सुख का अर्थ होता है, जो भौतिक साधनों से प्राप्त होता है, लेकिन उसका दूसरा पक्ष है दुःख। दुख सुख दो साथ रहते हैं, लेकिन भौतिक साधनों से व्यक्ति सुख प्राप्त करने का प्रयास करता है और एक सीमा तक प्राप्त भी करता है और वो आप को ठीक ठीक जैसे प्रोफेसर हैं, इंजीनियर हैं,

ये लोग आपको बता सकते हैं। गाइड कर सकते हैं कि भौतिक सुख की प्राप्ति कैसे होती है, लेकिन दूसरा शब्द है शांति, शांति उसको कहते हैं जो बिना किसी बाहरी वस्तु व्यक्ति और इंसान के जीवन में हम अनुभव कर सके, उसको मार्गदर्शन देते हैं, संत महापुरुष जो शांति का अनुभव कर चुके हैं, शांति उसको बोलते हैं, जिसमें बाहरी कोई आवश्यकता नहीं है, बाहरी कोई अपेक्षा नहीं है। किसी व्यक्ति वस्तु

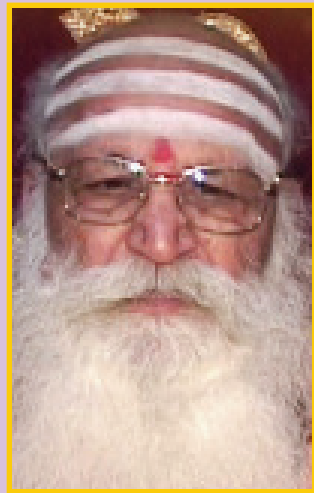


की परिस्थिति को वो आपको

संत महापुरुष ठीक-ठाक मार्ग दर्शन देते हैं और समृद्धि जो व्यापारिक उन्नति है, वो तो जिन्होंने व्यापारिक उन्नति की है। वो बता सकते हैं कैसे करना है, कैसे न करना है और उसके बाद भी आपके प्रारब्ध में है तो ही मिलेगा, उन्नति होगी, समृद्धि होगी, केवल गाइडेंस लेने से नहीं होती है, व्यापारिक उन्नति में मुख्य भूमिका है, भाग्य की और दूसरी परिश्रम का। सुख शांति और समृद्धि आप इन तीनों के अनुभव

छापते रहेंगे, तो मेरा ऐसा मानना है कि सामाजिक दृष्टि से व्यवहारिक दृष्टि से और आध्यात्मिक दृष्टि से सभी तरह के लोगों को ठीक ठीक गाइडेंस मिलेगा, मार्गदर्शन मिलेगा और मेरा विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से लोगों को ठीक रास्ता प्राप्त होगा। ईश्वर से प्रार्थना है माँ नर्मदाजी से प्रार्थना है - आपके इस संकल्प को इस पत्रिका को आगे बढ़ावे और लोगों की सफलता का कारण बनावे।

॥ ओम शांति ॥



## सुख शांति समृद्धि का अर्थघटन समाज गलत कर रहा है: महामंडलेश्वर भारती बापु

सुप्रसिद्ध लेखक, विचारक और पत्रकार जीतु भाई सोमपुरा कई सालों से आध्यात्मिकता की तरफ अच्छा प्रयास कर रहे हैं और उनके द्वारा ये मासिक पत्र सुख शांति समृद्धि को एक नयी दिशा प्रदान हो। जीतुभाई के इस प्रयास के लिए परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वे संपूर्ण सफलता प्राप्त करें।

समस्त मानव समाज में सुख शांति और समृद्धि का अर्थघटन बिल्कुल गलत हो रहा है, जिनकी वजह से समाज में से सुख शांति और समृद्धि का परिहास हो रहा है। क्योंकि हमारे शास्त्रों में सुख का अर्थ आत्म सुख और संतोष कहा है। हमारे में कहावत है कि 'संतोषी नर सदा सुखी' जहां तक हमारे जीवन में संतोष नहीं होगा तो कितनी भी भौतिक समृद्धि हो वो हमें सुख और शांति नहीं दे सकता।

## सोने की जूती पहनकर चलोगे तो कष्ट तो बढेगा ही: महामंडलेश्वर शिव चैतन्य जी महाराज



शरशय्या पर लेटे भीष्म पितामह सुख के दृढ साधन बताते हुए यह भी रेखांकित किया कि परमात्मा ने सर्वसुख किसी को नहीं दिये। किंतु मिले हुए एक, दो या चार सुखों में भी दीर्घ कालिन आनंद नहीं है। आज समाज सुख प्राप्ति के पीछे भाग रहा है.. इसलिए सुख प्राप्ति के बजाये सुख-प्राप्ति का साम्राज्य बढ़ रहा है। अरबपति सोने की जूती पहनकर चलेगा तो कष्ट ही पायेगा।

## महामंडलेश्वर आनंद चैतन्यजी महाराज : ईश्वरानुभूतिका निश्चित मार्ग यानी...

किसी भी कृत्य के लिए सही निर्णय केवल परमात्मा ही दे सकता है। इसलिए उसी का भरोसा, बड़ा भरोसा है, उसी का निर्णय सर्वमान्य है। हृदय की पावनता, सात्त्विक, सादाचार सहजता और चित्त-शुद्धि ही ईश्वरानुभूति का निश्चित मार्ग है।



## पूज्य साधु संत महात्माओं को 'सुख शांति समृद्धि' परिवार का प्रणाम

हो 'सुख शांति समृद्धि' सबकी कुंभ २०१३ में सबका नमन करते हैं सफल सरकारी आयोजन की शुभकामना करते हैं। है गर्व हमें सनातन धर्म पर सर्व पूज्य साधु संतों की हम पूजा अर्चना करते हैं.. हो सुख शांति समृद्धि सबकी हम ऐसी कामना करते हैं धो पाप गठरी कर कुंभ स्नान कर आध्यात्मिक ज्ञान भगृत मत भाग तू कर क्षण विश्राम हो सुख शांति समृद्धि सबकी हम ईश्वर को प्रार्थना करते हैं।

- भक्त अजय कुमार ठाकूर

बीमारी ईश्वर कृपा नहीं है, जन्मांतरों के कर्मों का परिणाम है

खाद्य सामग्री के भ्रामक विज्ञापन से बचें - आचार्य श्री बालकृष्णाजी महाराज

निश्चित रूप से हमारी मानसिक संवेदनाओं का प्रभाव हमारे स्वास्थ्य पर पड़ता है। संयमित, संतुलित जीवन दर्शन मायने रखता है। चरक संहिता कहती है-संयमेव परम रसायन, अर्थात् संयम ही परम औषधि है, रसायनों का रसायन है। अतः युवा वर्ग को संयम रूपी औषधि सदैव अपने साथ रखनी चाहिए।

बीमारी ईश्वर कृपा नहीं है। कृपा कष्ट दायक नहीं होती, सुख दायक होती है, रोग हमारे ही कर्मों का परिणाम है, जन्म-जन्मांतरों के कर्मों का परिणाम है। आत्मस्थ रहने से तनाव मुक्त हुआ जा सकता है। ऋषि परंपरा के संरक्षण और राष्ट्र देव के आराधन से ही जीवन को सार्थकता



प्रदान की जा सकती है।

डिब्बा बंद खाद्य में वह शक्ति नहीं जो रोटी सब्जी में है, दूध में है। खाद्य सामग्री के प्रचारक विज्ञापन में

जो कुछ है वह खाद्य में नहीं है, इसलिए भ्रामक प्रचारों से मॉडर्न भोजन से बचें। दिनचर्या ठीक रखें, दुर्गुणों को पहचानना सीखें। योग-साहित्य विशेष रूप से बच्चों के लिए ही है, उसे मंगाकर पढ़ें, सीखें और सिखायें।

कामेच्छा के विषय में जहां तक मैं सोचता हूँ कि व्यक्ति इतना कार्य में जुट जाए, इतनी सेवा के कार्य में लगे, इतनी साधना में लगे की उस विषय में आप के मार्ग में बाधा ना आये। अपने जीवन को इतना पवित्र बनाये कि जो इच्छाएं और इस तरीके की अवस्था आती है, तो हवा के वेग के झोके की तरह निकल जाये। उसका प्रभाव आपके देह पर ना पड़े।

सबको 'सुख शांति समृद्धि' प्राप्त हो :  
राष्ट्रीय संत चिन्मयानंद बापु

युवा राष्ट्रीय संत श्री चिन्मयानंद बापु : जीवन में हर व्यक्ति की ये ही तीन अपेक्षा होती है। सुख-शांति-समृद्धि, सबसे पहली अपेक्षा समृद्धि। समृद्धि इसलिए सुख की अपेक्षा से, लेकिन सुख होने के बाद भी तीसरा जो पडाव है वो शांति का। ये तीन जो व्यक्ति के पास है, उसे मृत्युलोक में सफल माना जाता है। व्यक्ति के पास सुख हो, लेकिन अशांति भी हो ऐसा सुख व्यर्थ है। इसीलिए इस लोक में प्रतिष्ठापित होने के लिए समृद्धि, सुख और अंत में शांति इन तीनों की महत्वपूर्ण भूमिका है और जीतुभाई सोमपुरा का जो प्रयास है, वो यही है कि अपनी



लेखनी के माध्यम से किसी तरह से लोग इन तीनों को प्राप्त कर सकें। इसके लिए मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं और मेरी ओर से पूर्ण सहयोग।

## पीस ऑफ माइंड चैनल पर प्रसारित 'सुख शांति समृद्धि' टी. वी. सीरियल क्या है? क्या नहीं है?



**राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मनोरमा बहन :** दर्शकों और पाठकों के सामने जीतु सोमपुराजी लेकर आ रहे हैं, सुख शांति समृद्धि और इसमें आपको भारत की गरिमा, साहित्य और संस्कृति के संरक्षक, सनातन धर्म के रहनुमा अनेको संत शांति ध्वज लेकर एक श्रृंखला में नजर आयेंगे।

इसमें आप पायेंगे कि भारतीय दर्शन बाह्य भौतिक जगत की बहुत सारी सुख सुविधाओं से कैसे निरासक्त भाव से, उस उसीम के प्रति समर्पित

सुख शांति समृद्धि मासिक ईश्वर धर्म और जीवन के बारे में प्रश्नोत्तरी का एक अनोखा मासिक है। जिसमें सुख शांति समृद्धि टी. वी. सीरियल की झलक के अंश भी होंगे तथा स्वतंत्र रूप से सिर्फ मासिक के लिए पूज्य संत, महात्माओं और विभिन्न क्षेत्रों की प्रसिद्ध हस्तियों की नयी प्रेरणात्मक मुलाकातें भी होंगी...

भारत की विभिन्न विचारधारा और साहित्य क्षेत्र की मर्मज्ञ अभ्यासु तेजस्वीनी राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी मनोरमा बहन 'सुख शांति समृद्धि' की तमाम सामग्री के अभ्यास के पश्चात यहां अपना तटस्थ मत प्रस्तुत कर रही हैं।

हो गया, एक वो तपका जिसने अंतरमुखा में शांति की अनुभूति की। सुख की अनुभूति की और उस ओजस्वी धारा को उस जगत नियंता से जोड़ कर अनहद नाद में सुख और शांति का अनुभव किया। बहुत सारे विभिन्न संतों की वाणी से भारतीय वांग में दर्शन के अनेक पहलु आपके सामने नजर आयेंगे। अनेक विधाएं आपके सामने नजर आयेंगी। नित्य नये स्वर्णों के साथ लेकर आ रहे हैं और इतना

ही नहीं सुख शांति समृद्धि टी. वी. सीरियल और मासिक में अतिथियों की क्या भावनाएं हैं, एक ऐसी सीरीज कि वो हमारे बच्चों के प्रति क्या भावनाएं रखते हैं कि हमारे युवा पीढ़ी के अंदर कितना जोशो-खरोश और शक्ति का समुद्र लहरे मारता है। लेकिन क्या उनकी निष्ठा राष्ट्र के प्रति है? अगर नहीं है? तो कैसे आयेगी? और यदि वो भटक रहे हैं, तो किधर और क्यों? क्यों न उन्हें हम राष्ट्र के

प्रति एक सशक्त प्रहरी बनायें। आपको इसमें दिखाई पड़ेंगे, व्यसन मुक्ति के उपाय देते हुए हमारे पुरोध, हमारे संत, हमारे रहनुमा कि कैसे व्यसनों से हमारी युवा पीढ़ी जकड़ रही है, उसे हम अपेक्षा और उपेक्षा से निकाल कर व्यसन मुक्त बना सकें और इसके साथ ही प्रस्तुत होगा एक और विश्व की आधी आबादी का रहनुमा आप समझ गये होंगे, हमारा नारी संसार नारियों के लिए हमारे रहनुमाओं ने किस

तरह के भाव व्यक्त किये। एक ओर संसार में जहां नारी अबला मानी जा रही है। जहां आये दिन बलात्कार और शोषण का शिकार हो रही है कभी स्वेच्छा से तो कभी दबाव से उस नारी को समाज में कितना श्रेष्ठ स्थान दिया गया है और आज भी कितनी श्रेष्ठता के साथ हमारा नजरिया उनके प्रति है, आपका नित्य नये अतिथियों से मिलन होगा। हर पृष्ठ पर एक नयी कहानी एक नयी बात आपके लिए एक नयी सौगात लेकर आ रहे हैं जीतु सोमपुराजी।

॥ ओम शांति ॥



# 'सुख शांति समृद्धि' मासिक का गौरवपूर्ण 'सेवा मूर्ति' अॅवार्ड पूज्य गुरुजी मामाजी एवं उनकी सुपुत्री सत् माताजी को समर्पित



हमें बड़ी प्रसन्नता है कि 'सुख शांति समृद्धि' मासिक अपना गौरवपूर्ण 'सेवा मूर्ति अॅवार्ड' प्रदान करने की आदर्श परंपरा के अंतर्गत जरूरतमंद इंसान और पशु पक्षि की सेवा के क्षेत्र में जिन्होंने विशिष्ट योगदान दिया हो ऐसे सम्मानित महानुभाव या संस्था को समर्पित करती रहेगी। पत्रकारों की एक विशेष समिति ने लिए हुए निर्णय अनुसार इस अंक का अॅवार्ड पूज्य संत श्री गुरुजी मामाजी एवं उनकी सुपुत्री पूज्य श्री सत् माताजी को दंडवत प्रणाम के साथ मासिक समर्पित करता है।



ॐ गुरुदत्त गिरनारी आश्रम ट्रस्ट (कूवाडवा-राजकोट) के महंत श्री परम पूज्य गुरुजी मामाजी एवं उनकी सुपुत्री पूज्य सदगुरु सत् माताजी हैं। आप दोनों आज कई सालों से आश्रम में अनेक सेवाकीय

प्रवृत्ति कर रहे हैं। जैसे की गौ-सेवा, लंगर, आश्रम में आने वाले सभी भक्तों को भोजन की सेवा, जरूरतमंद बच्चों को शिक्षण की सेवा, जरूरतमंद विधवा बहनों को सेवा, जरूरतमंद अपंगों की

सेवा और सबसे अधिक कई वर्षों से व्यसन मुक्ति अभियान चला रहे हैं।

उनकी ऐसी सेवकीय प्रवृत्तियों को देख अपने शंकराचार्य परंपरा के श्री ज्योतिष मठाधीश्वर एवं

द्वारका शारदा पीठाधीश्वर परम वंदनीय जगत गुरु शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वतीजी महाराज ने पूज्य गुरुजी मामाजी एवं माताजी को गुरु दीक्षा दी है और २००९ में कूवाडवा स्थित आश्रम पर श्री

गुरुदत्त भगवान का भव्य पीठ का भूमि पूजन जगत गुरु शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वतीजी महाराज के शुभ हस्तों से किया गया था।

मो. : ०९८७०० ७०००७ - ०९८७९८ ७८७८७

## भारत का सर्वप्रथम ईश्वर धर्म और जीवन के बारे में प्रश्नोत्तरी का मासिक 'सुख शांति समृद्धि' का परमपूज्य संत महात्माओं के आशीर्वाद के साथ शुभारंभ

❖ 'सुख शांति समृद्धि' मासिक की हिंदी समन्वय आवृत्ति में भारत के तमाम धर्म संप्रदाय और विभिन्न विचारधारा के संत महात्माओं द्वारा जीवन जीने की कला का सुंदर समन्वय।

❖ ईश्वर धर्म और जीवन के प्रति नई पीढ़ी को मार्गदर्शन करने के लिए ज्ञान पर आधारित प्रेरणादायी प्रश्नोत्तरी

❖ भारत के परम पूज्य संत महात्मा द्वारा जीवन जीने की कला के सुंदर समन्वय से संस्कार एवं शांति की सुंदर अनुभूति

❖ विविध क्षेत्र की प्रसिद्ध हस्तियों के द्वारा अपने संघर्ष और सफलता के रहस्य एवं प्रेरणा की अनोखी प्रस्तुति।

❖ नौकरी और व्यवसाय में शक्ति और समृद्धि प्राप्त करने के लिए मैनेजमेंट गुरु एवं श्रीमंतों द्वारा श्रेष्ठ मार्गदर्शन।

❖ भारत के श्रेष्ठ तबीब और मनोचिकित्सकों द्वारा सुंदर स्वस्थ हेतु अनमोल सुझाव।

❖ विविध अवगुणों और मानसिक तनाव से मुक्ति, आत्मविश्वास की प्राप्ति तथा कार्यक्षमता एवं व्यक्तित्व में विकास के विभिन्न पहलुओं की सुंदर स्पष्टता।

❖ आओ हम सब मिलकर इस मासिक को मानव समाज की प्रेरणा और सेवा का अलौकिक संगम तीर्थ बनाएं।

❖ हमारी वेबसाइट पर सुख शांति समृद्धि की विशेष आवृत्ति नियमित रूप से प्रसिद्ध होती रहेगी।

❖ आशा करते हैं कि आप सबके आशीर्वाद और सहयोग से बहुत जल्द 'सुख शांति समृद्धि' की साप्ताहिक आवृत्ति प्रसिद्ध होगी।

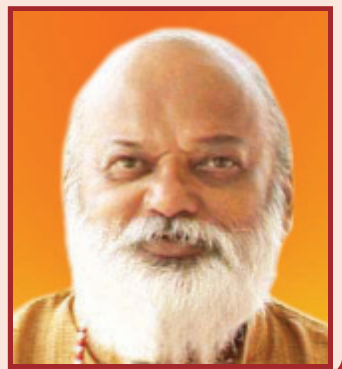
### ईश्वर को प्रार्थना

प्रति,

परम प्रिय पाठक परिवार,

प्रणाम! आज मैं अपनी भावनाओं के गीत को प्रस्तुत करना नहीं चाहता। एक दिन मेरे कार्य का संगीत ही सबकुछ कहेगा। मैं ऐसा दिया बनना चाहता हूँ, जिससे लोग मशाल जलाकर अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ें। आइये हम सब मिलकर इस मासिक को मानव समाज की प्रेरणा और सेवा का जंगम तीर्थ बनाये। सफलता संस्कार और स्वास्थ्य के सुवर्ण सुत्र का प्रसाद लोगों में बांटे और ईश्वर से प्रार्थना करें कि पाठक परिवार सहित समाज में हर एक को जीवन में 'सुख शांति समृद्धि' प्राप्त हो, आभार!

-जितू सोमपुरा (संपादक)



आप इस मासिक के पत्रकार, मार्गदर्शक या सहयोगी बनना चाहते हैं तो हमारा संपर्क करें  
मोबाईल : 09324446487

आप भी अपने प्रश्न तस्वीर के साथ भेज सकते हैं...

# सुख शांति समृद्धि मासिक का यह अंक पूज्य गोस्वामी श्री इंदिरा बेटीजी को समर्पित



भागवत कथा वचनमृत शुरु किया। तत्पूर्व भी आपने १२ साल की छोटी आयु में श्रीमद् भगवतगीता, षोडशग्रंथ इत्यादि विषयों पर जाहेर अनेक व्याख्यान दिये।

भगवद् सेवा, स्मरण, अध्ययन एवं सत्संग के साथ आप श्री ने मानवसेवा का एवं समाजोपयोगी प्रवृत्तियां भी शुरु की। कई नेत्र शिविरें, अकाल में गौसेवा एवं अन्नदान इत्यादि का आयोजन किया। भूचाल हो, चक्रवात हो,

इत्यादि का निर्माण किया है।

बडौदा में संस्कार एवं संस्कृति धाम स्वरूप 'त्रजधाम' में आज भी बाल, युवा, वृद्ध, रोगी इत्यादि के लिए प्रवृत्तियां चल रही है। अब आदिवृदावन जतिपुराधाम में आप श्री वल्लभ धाम का नव निर्माण करने में व्यस्त है।

आप श्री ने भारत के अनेक नगर एवं ग्राम्य विस्तारों में परिभ्रमण किया है। पूरे विश्व भर में अमेरिका, युरोप, यु.के., अफ्रिका, मीडल

(Human Enrichment by love & Peace) जैसी अनेक संस्थाओं का निर्माण किया है। विश्व एवं भारत में अनेक सत्संग मंडलों का गठन, मंदिरों की स्थापना, सामाजिक संस्थाओं का निर्माण किया है। विश्व एवं भारत में अनेक सत्संग मंडलों का गठन, मंदिरों की स्थापना, सामाजिक संस्थाओं की रचना की है।

आप श्री भक्तिज्ञान की प्रवृत्तियों के साथ साहित्य निर्माण का कार्य भी कर रही हैं। गुजराती, हिंदी, संस्कृति में आपश्री की अनेक उत्कृष्ट काव्य रचनायें हैं। आपश्री के अनेक काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं। आपश्री के द्वारा लिखित अनेक पुस्तक भी प्रकाशित हो चुके हैं। आपश्री के व्यक्तित्व में एवं वाणी में ममतामयी माता का दर्शन होता है। आप श्री के निर्मल नेत्रों में श्रीयमुनाजी का कृष्ण अनुराग छलकता है एवं श्वेत परिधान में गंगाजी का पावनत्व झलकता है। श्री जीजीजी के विशाल भक्तगण के द्वारा उनके अमृत महोत्सव का आयोजन नये साल में आरंभ होने वाला है।

जगद्गुरु श्रीवल्लभाचार्यजी सोलहवीं पीढी में, षष्ठपीठाधीश्वर गो. १०८ श्रीवन्नरत्नलालजी महाराज श्री वेद द्वितीय आत्मज श्रीमधुसुदनलालजी के यहां सन् १९३९ के भाद्रवद चतुर्थी के दिन पूज्या जीजीजी का प्राकट्य हुआ। बचपन से ही बाल ब्रह्मचारिणी रहकर भगवद् कार्य करने के संकल्प में आपश्री के पूज्य चरणों ने आशीर्वाद सह वारणसी संस्कृत विश्वविद्यालय की वेदसर्वदर्शन विषय से आचार्य परीक्षा तक अध्ययन करने में सहयोग प्रदान किया।

श्रीमद् भागवतजीका अध्ययन

**पूज्य जीजीजी भगवद् सेवा, स्मरण, अध्ययन एवं सत्संग के साथ मानवसेवा एवं समाजोपयोगी प्रवृत्तियां कर रही हैं। विश्व एवं भारत में अनेक सत्संग मंडलों का गठन, मंदिरों की स्थापना, सामाजिक संस्थाओं का निर्माण किया है।**

परमहंस श्रीनरहरि आकोलकर शास्त्रीजी के पास परिपूर्ण करके आपश्री ने सन १९७२ से श्रीमद्

जल उत्पात हो या रोगाक्रमण हो आपश्री ने अनेक स्थानों का नवनिर्माण, पुनर्वसन, अस्पतालों

इस्ट के कई शहर एवं युरोप के कई देशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार किया है एवं Help

## विश्व संत परम संघ एवं दिल्ली संत महामंडल के अध्यक्ष-महामंडलेश्वर स्वामी प्रज्ञानंदजी महाराज: व्यसन स्वयं नहीं आते हैं, हम उन्हें शौक से घर ले आते हैं

सुख और दुख का मूल है विलासिता! सुख शांति और समृद्धि मासिक पत्रिका के माध्यम से पाठकों को सच्ची दिसा मिले, लोगों के जीवन में सुख-शांति समृद्धि की वर्षा हो, जीवन से दुख दूर हो-यही मेरी हार्दिक शुभेच्छा है।

जो सुख भीतर में है, जो शांति भीतर में है, वह बाहर में, जंगल में नहीं। दुष्कर्मों को खाना दुख है और सुकर्मों को खाना सुख है। अर्थात् दुख की अवधि सुख के आगमन का संकेत है और

**आपकी पत्रिका के माध्यम से सब के जीवन में सुख, शांति, समृद्धि की वर्षा हो, दुख दूर हो यही शुभेच्छा**



सुखोपभोग की अवधि सुख के समापन की चेतावनी है। परम सुख अन्तर से जुड़ने में है, परमात्मा

से जुड़ने में है, यही सुख स्थाई भी है।

व्यसन मुक्त के बारे में आपके

प्रश्न के उत्तर में हम इतना ही कहना चाहेंगे कि, जिस प्रकार से गर्मी या ताप शरीर में निहित होता है, गरम कपड़े तो केवल कवच हैं, जो शारीरिक उष्णता को बाहर निकलने नहीं देते, ठीक उसी प्रकार से नशा शराब में नहीं बल्कि भीतर की इच्छा में होता है। व्यसन स्वयं नहीं आते, हम उन्हें शौक से घर ले आते हैं। दुनिया में ऐसा कोई सुख है ही नहीं जिसके भोग के पश्चात् दुख न आता हो। अतः मेरा निवेदन है - जो व्यक्ति वस्तु का दास नहीं, जिसमें दुर्व्यसन

विलास नहीं, दुःख आता उसके पास नहीं।

संकल्प व शपथ के द्वारा हमने अमेरिका, इंग्लैंड व अन्य यूरोपियन देशों में लगभग अस्सी हजार लोगों से धूपपान छुड़वाया है। देश के भीतर हमारी सर्वोपरि दक्षिणा व्यसनमुक्ति ही है। हमारे निवेदन पर यदि एक भी व्यक्ति व्यसनमुक्त हो जाये तो हमारा सौभाग्य होगा, क्योंकि स्वयं को व्यसनमुक्त करने वाला व्यक्ति स्वयं में संदेशवाहक होगा, इस प्रकार व्यसन मुक्त समाज बन सकेगा।

सुख शांति समृद्धि हिन्दी मासिक समाचार पत्र, स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : जितू सोमपुरा ने सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, गाला नं. ७, उद्योग भवन, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, वालभट्ट रोड, गोरगांव (पूर्व), मुंबई-४०००६३ से मुद्रित कर ३२, प्रेस इंकलेव, ६३, वैद्य नगर, दत्तानी स्कूल के सामने, टाटा पावर हाऊस, बोरिवली (पूर्व), मुंबई, महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक : जितू सोमपुरा Regd. No. : MAHHIN08172/13/1/2010 -TC